

स्वास्थ्य विशेष

स्वास्थ्य आपका कोशिश हमारी

सूरन कंदा के चमत्कारी फ़ायदे

जड़ से होने वाली बीमारियों, अपच, ब्लॉडिंग के घरेलू आयुर्वेदिक नुस्खे

पिकी कुंठू

हमारी आयुर्वेदिक परंपरा में सूरन कंदा का बहुत खास महत्व है। "सूरन खाओ, तो पेट खराब नहीं होगा!" क्योंकि सूरन सिर्फ एक सब्जी नहीं बल्कि औषधीय गुणों से भरपूर एक नैचुरल प्रोडक्ट है।

आजकल के अनियमित खान-पान से होने वाली समस्याओं को हल करने में सूरन बहुत असरदार है

* जड़ की बीमारियों

* अपच

* शौच करते समय खून आना

सूरन क्या है? पोषण गुण

* सूरन (हाथी के पैर जैसा मीठा

आलू) एक कंद वाली सब्जी है जो

मिट्टी में उगती है। इसमें मुख्य रूप से ये

चीजें होती हैं-

* विटामिन C

* विटामिन B6

* फाइबर

* पोटैशियम

* कैल्शियम

* आयरन

सूरन

* पाचन को बेहतर बनाता है

* सूजन कम करता है

* आंतों से टॉक्सिन निकालता है

* गैस, कब्ज, एसिडिटी से राहत

देता है

बवासीर और ब्लॉडिंग के लिए

सूरन का इस्तेमाल एनस के पास एक

दर्दनाक गांठ, जो एक सूजी हुई नस



होती है, बवासीर का एक कारण है। सूरन इसके लिए बहुत सही है।

घरेलू नुस्खे

* सूरन को छोटे चौकोर टुकड़ों में

काट लें

* पैन में थोड़ा सा शुद्ध घी डालें

* टुकड़ों को हल्का सुनहरा भूरा

होने तक तलें।

* सुबह और शाम सेवन करें

फायदे -

सूजन कम करता है

खून बहना रोकने में मदद करता

है

मल त्याग को आसान बनाता है

शरीर हल्का महसूस होता है

पाचन सुधारने के लिए सूरन

* अपच

* गैस

* पेट फूलना

* लंगड़ापन

हेल्दी फाइबर और एंजाइम

* आंतों को सेहत सुधारता है

* टॉक्सिन निकालता है

* भूख बढ़ता है — इसे हफ्ते में

2-3 बार लें

आयुर्वेदिक तरीका आयुर्वेद के

अनुसार, सूरन -

* वात-पित्त-कफ को बैलेंस

करता है

* खून को साफ करता है

* मूल बीमारियों को कम करता है

* लिवर और पाचन को बेहतर

बनाता

नेचुरल हेल्थ की ओर एक कदम

केमिकल दवाओं के बजाय रोजाना नेचर ने एक बोलड सॉल्यूशन निकालता है।

सूरन जैसी सिंपल सब्जी

* लंबे समय तक सेहत

* शरिया के हिसाब से नैचुरल

इलाज

छोटा सा हल अगर मूल रोग,

बदहजमी या शौच के कारण खून आ

रहा हो, तो

* सोने के टुकड़े

* घी में हल्का फ्राई करें

* सुबह और शाम को खाएं

* कुछ ही दिनों में आपको फर्क

महसूस होगा।

हेल्थ ही असली दौलत है, शुगर-

प्री इंडिया की ओर एक कदम आगे।

सुबह पेट साफ नहीं होता? कब्ज रहती है?

पिकी कुंठू

सोचते हो — कल से ठीक हो

जाएगा...

पर पेट रोक देता है दिन की

शुरुआत।

Scientific Reason: छुहारे

में मौजूद soluble fiber +

natural sugars + minerals

colon की दीवारों पर पानी खींचकर

stool को soft बनाते हैं।

* रात को भिगोने से छुहारा नरम

हो जाता है, जिससे सुबह खाते ही

आंतें active हो जाती हैं,

* bowel movement

smooth और पूरी तरह से होता है।

* Fiber stool को bulky

बनाता है, pressure create

होता है और

* शरीर आसानी से waste

बाहर निकाल देता है — यही कारण

है कि पेट हल्का और साफ महसूस

होता है।

Ayurvedic Reason:



सुबह पेट साफ नहीं होता? 2 छुहारे रात को भिगो दो - सुबह खा लो कब्ज दूर - पेट एकदम साफ और हल्का !

आयुर्वेद में छुहारा वात शांत करने

वाला माना गया है — और

* कब्ज की जड़ ही वात

imbalance है।

* भिगोकर खाने से छुहारा ठंडा

और सौम्य हो जाता है — जिससे पेट

की dryness कम होती है और

natural lubrication बढ़ती है।

Fayde (Benefits):

* सुबह स्टूल आसानी से

निकलता है — पेट दबाव नहीं

बनाता।

* गैस, भारीपन और पेट की

जकड़न में आराम मिलता है।

* दिमाग हल्का महसूस होता है

और दिन energetic शुरू होता है।

* bloating कम होती है, पेट

नरम और शांत लगता है।

Nuksan (Harms):

* बहुत ज्यादा छुहारे loose

motion की स्थिति बना सकते हैं।

* zimmerdari से खाओ —

diabetes वाले sugar spike

महसूस कर सकते हैं।

* बहुत गर्म तासीर होने के

कारण गर्मियों में मात्रा घटानी

चाहिए।

टूटे रिश्तों की यादें? दिमाग शांत नहीं रहता? सोना मुश्किल? शरीर पलंग पर - मन पुरानी यादों में अटका।

पिकी कुंठू

Scientific Reason:

* अश्वगंधा में withanolides

होते हैं — ये stress hormones

(cortisol) को balance करने में

help करते हैं

* Milk में मौजूद tryptophan

sleep hormones को support

करता है।

* दोनों मिलकर emotional

tension soften करते हैं —

mind slow होता है, नींद steady

आती है।

Ayurvedic Reason:

* अश्वगंधा मन:शामक

rasayana — anxiety,

emotional pain, fear,

overthinking में support।

* गुनगुना दूध वात और पित्त शांत

करता है — वही दो दोष emotional

breakdown की जड़।

Fayde (Benefits):

* emotional tension कम

— पुरानी यादों का बोझ हल्का।

* दिमाग शांत — रात में नींद

गहरी।

* nervous system relax

— stress कम।



टूटे रिश्तों की यादें सोने नहीं देती? 1 चुटकी अश्वगंधा पाउडर + गुनगुना दूध रात में लो। Emotional दर्द धीरे-धीरे हल्का होता है - हिम्मत लौटती है

* सुबह हल्का feel, मनस्थिर।

Nuksan (Harms):

* thyroid, BP, sugar

patient doctor से पूछें।

* नींद की दवा का

replacement न समझें —

support मानें।

* दिमाग बहुत sluggish लगे

तो मात्रा घटाएं।

पेट में कीड़े की समस्या बार-बार हो जाती है?

पिकी कुंठू

पेट ठीक से साफ नहीं होता, भूख भी

अजीब सी रहती है और शरीर धीरे-

धीरे कमजोर होने लगता है। इसका

कारण पेट में कीड़े होना भी हो सकता है,

आइए जाने इसका घरेलू एवं सरल इलाज

Scientific Reason: पेट में

कीड़े (intestinal worms) अक्सर

गंदे पानी, कच्चे भोजन या कमजोर

digestion की वजह से पनपते हैं। कच्चे

पपीते में मौजूद papain enzyme

कीड़ों के लिए अनुकूल माहौल को खत्म

करता है और उनकी पकड़ को आंतों से

ढीला करता है। जब digestion सुधरता

है, तो कीड़े अपने-आप टिक नहीं पाते।

Ayurvedic Reason:

* शहद + कच्चा पपीता कृमिनाशक

माना गया है। यह पाचन अग्नि को तेज

करता है और आम (toxins) को बाहर

निकालने में मदद करता है। जब अग्नि

सही हो जाती है, तो कीड़े अपने-आप

खत्म होने लगते हैं।

Fayde (Benefits):

* पेट हल्का और साफ महसूस होता

है

* बार-बार पेट दर्द में राहत

* भूख सामान्य होने लगती है

* शरीर की कमजोरी धीरे-धीरे कम

* digestion पहले से बेहतर

Nuksan (Harms):

* ज्यादा मात्रा से loose motion

* गर्भवती महिलाएँ न लें

* बच्चों को बहुत कम मात्रा

* 7-10 दिन से ज्यादा लगातार न लें



पेट में कीड़े की समस्या? सुबह खाली पेट 1 चम्मच कच्चा पपीते का रस। आंतों से कीड़े साफ हो जाएंगे।

पेट दर्द बार-बार? पेचिस? गैस?

पिकी कुंठू

ग्रामीण इंडिया का खास उपाय — चरोटा शहर की दवा ने धोखा दिया? एक बार देहात का उपाय ट्राय करो।

Scientific Reason: चरोटा में natural antispasmodic + anti-inflammatory गुण होते हैं।

* यह gut muscles को relax करके cramping और twisting pain को calm करते हैं।

* फाइबर rich होने से पेचिस और loose motion में भी comfort मिलता है।

* स्वाद थोड़ा पनसुते जैसा — पर असर

heavy!

Ayurvedic Reason: आयुर्वेद में चरोटा

अग्नि दीपक और कफ नाशक —

यानि digestion strong + gas कम + पेट

दर्द शांत।

Fayde:



पेट दर्द की समस्या में ग्रामीण चरोटा को खाना पसंद करते हैं। स्वाद पनसुते जैसा लेकिन शरीर के लिए काफी फायदेमंद पेचिस हो या फिर पेट का मरोड़ सभी के लिए ये भाजी बेस्ट है।

* पेट दर्द हल्का

* digestion support

* गैस कम

* पेचिस में आराम

* पेट हल्का और शांत

Nuksan:

* ज्यादा न खाएं

* dehydration में पानी बढ़ाएं

* chronic pain में डॉक्टर

* babies में small मात्रा

सुबह उठते ही थकान? energy zero? आँखें खुलें लेकिन शरीर नहीं

पिकी कुंठू

Scientific Reason:

* घी में essential fatty acids —

brain + muscle energy boost।

* मिश्री natural glucose —

morning fuel instantly ready।

* दोनों मिलकर blood sugar की गिरावट

को रोकते हैं जो सुबह lethargy का

common कारण है।

Ayurvedic Reason:

* घी वात शमन — stiffness,

weakness, fatigue कम।

* मिश्री पित्त-संतुलक — mental

gloominess हल्का।

Fayde (Benefits):

* सुबह weakness और dullness कम।

* body active — energy पूरे दिन

steady।

* दिमाग हल्का — morning fog हटती

है।

* digestion भी smooth — पेट भी

शांत।

Nuksan (Harms):

* high sugar वाले मिश्री limit करें।

* घी ज्यादा भारी — obesity में

धर्म अध्यात्म



भगवान कृष्ण के चार पवित्र धाम - भारत की आध्यात्मिक आत्मा का एक दिव्य नक्शा



पिंकी कुंडू

कृष्ण ने दिव्यता को एक जगह तक सीमित नहीं रखा। उन्होंने इसे पूरे भारत में फैलाया। ये चार धाम सिर्फ जगहें नहीं हैं, ये चेतना की अवस्थाएँ हैं। आइए, इनके जरिए यात्रा करें

1. **बद्रीनाथ उत्तर**। शांति और मोक्ष हिमालय की गोद में बसा

बद्रीनाथ तपस्या का प्रतीक है। यहाँ, कृष्ण हमें याद दिलाते हैं: स्थिरता ही शक्ति है। शांति मन। यह धाम आत्म-नियंत्रण और समर्पण सिखाता है।

2. **द्वारका पश्चिम**। धर्म और नेतृत्व कृष्ण का सुनहरा शहर - जिसे कभी समुद्र ने निगल लिया था। द्वारका जिम्मेदारी, शासन और धर्म का प्रतीक है। कृष्ण ने शासन किया, फिर भी अनासक्त रहे। विनम्रता के साथ शक्ति - ज्ञान के साथ नेतृत्व। एक राजा,

लेकिन कभी ताज का गुलाम नहीं। 3. **जगन्नाथ पुरी पूर्व**। प्रेम और समानता जगन्नाथ - ब्रह्मांड के भगवान सबके हैं। कोई भेदभाव नहीं। पुरी में, कृष्ण शुद्ध करुणा बन जाते हैं। रथ यात्रा भगवान को लोगों तक ले जाती है - न कि इसका उल्टा। यहाँ दिव्यता भक्तों के साथ चलती है।

4. **रामेश्वरम दक्षिण**। भक्ति और शुद्धि जहाँ जमीन समुद्र से मिलती है। जहाँ राम और शिव कृष्ण के ब्रह्मांडीय संतुलन से एकजुट होते हैं।

रामेश्वरम सिखाता है: "दिव्यता को खोजने से पहले आत्मा को शुद्ध करें।" यहाँ विश्वास अनुशासन, विनम्रता और समर्पण है।

* चार धामों की छिपी हुई ज्यामिति उत्तर-दक्षिण। पूर्व-पश्चिम। यह कोई संयोग नहीं है। यह एक आध्यात्मिक डिजाइन है। कृष्ण ने भारत को सिर्फ भौगोलिक रूप से ही नहीं, बल्कि ऊर्जावान रूप से भी जोड़ा।

प्रतिनिधित्व करते हैं: • नियंत्रण (बद्रीनाथ) • जिम्मेदारी (द्वारका) • करुणा (पुरी) • पवित्रता (रामेश्वरम) इन चारों में महारत हासिल करें और जीवन ही एक तीर्थयात्रा बन जाएगा।

* अंतिम सत्य कृष्ण ने आपसे दुनिया से भागने के लिए नहीं कहा। उन्होंने आपको सिखाया कि इसमें दिव्य रूप से कैसे जिंजा जाए। रास्ते पर चलें। आत्मा को संतुलित करें। धर्म की रक्षा करें।



कुल देवी, कुल देवता और ग्राम देवी-देवता, दो शक्तियों की रहस्यमयी दुनिया, जिनके बिना अधूरी है हर पूजा (खरमास में पाए कुलदेवी, ग्राम देवता की कृपा)

पिंकी कुंडू
* आपके कुल की शक्ति कौन है?
* आपके गांव की रक्षा कौन करता है? जाँचिए कुलदेवी और ग्रामदेवी की पारंपरिक, धार्मिक, सामाजिक मान्यता और शक्ति। भारत के धार्मिक और सामाजिक जीवन में कुलदेवी-देवता और ग्राम देवी-देवता की अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका है। बल्कि पश्चिम, पूर्व-पूर्व और सुखा के लिए खड़ी की गई थीं। इनका आधार वेदों से शुरू लेकर गांवों के जीवन में समाहित हो गया। यही वजह है आज भी इन दिनों का पालन पूरे अनुशासन के साथ किया जाता है। कुलदेवी-देवता, वंश की आध्यात्मिक शक्ति और स्मृति ग्रंथों में मूल इसके बारे में विस्तार से बताया गया है। ये परंपरा कुछ वर्षों की नहीं बल्कि सैकड़ों सालों से चली आ रही है, जो पीढ़ी दर पीढ़ी ट्रांसमिटर होती चली आ रही है। आज के आधुनिक दौर में भी इनकी अद्वितीय करने की किस्मत किसी में नहीं है। इस परंपरा के निष्ठावान भक्तों में कुल और ग्राम के साथ देवताओं की संरचना में मिलती है। मनुस्मृति (2.103) में स्पष्ट बताया गया है कि कुलस्य रक्षणार्थं तु कुलदेवतां समाचरेत्। इसका अर्थ है कि वंश की रक्षा के लिए

कुलदेवता की पूजा की जाए। इसी प्रकार प्राचीन ग्रंथ जैसे याज्ञवल्क्य स्मृति और याज्ञवल्क्य स्मृति में कुलदेवता को पितरों के तुल्य पूजनीय माना गया है। कुलदेवता कौन लेता है? एक विशेष गोत्र, वंश या जाति के लिए तय किया गया ईंट या रत्न देवता। उनकी पश्चिम पीढ़ियों से चली आ रही परंपरा, कुल पुरोहित, या परिवारिक गौरव से होती है। कुलदेवता की पूजा कब और क्यों? विवाह, मुंडन, गृह प्रवेश, उपनयन, साधना जैसे संस्कारों से पहले। * कई घरों में देवता की मूर्ति, धिया को रखकर विधिपूर्वक पूजन किया जाता है। * ग्राम देवी या ग्राम देवता, गांव की सीमा पर बैठे रहती हैं। इसकी उपासना में आदिवासी संस्कृति, द्रविड़ परंपरा और पुराणों में व्यापक उपस्थिति देखने को मिलती है। स्कन्द पुराण में आनंदाल का उल्लेख मिलता है जो नगसागरी और सुरी शक्तिओं से गांव की रक्षा करता है। ये पूजा क्यों जरूरी है? गांव में वर्षा, फसल, नगसागरी, अन्न, अकाल से बचाव के लिए। * नवरात्रि, वैश्रावण, जमा और अनादस्ता पर विशेष पूजा।

दोनों का धार्मिक अर्थ। * कुलदेवता- पूर्वजों की आत्मा की सुरक्षा और मार्गदर्शक शक्ति। * ग्रामदेवता- भौगोलिक, नैतिक और सामाजिक संस्कारों के विरुद्ध रक्षक। इन दोनों को समझना अपने मूल, परंपरा और सामाजिक संरचना को समझना है। आज के दौर में ये क्यों आवश्यक है? * ग्राम के शरों में रहते हुए भी लोग कुलदेवी के दर्शन के बिना विवाह नहीं करते। * ग्रामदेवता के मंदिरों में अब भी मेला, बलिदान और प्रदक्षिणा की परंपरा जीवित है। * ये लोक-शक्ति और शास्त्र-शक्ति का अद्भुत संगम है। कुलदेवी या कुलदेवता की पूजा न करने से कौन से बुरे प्रभाव होते हैं? * वंदना- मानसिक अशांति, परिवार में कलह * नंगल- विवाह और संतान में बाधा * गुरु-धर्म से भटकना, संस्कारों में विचल * शांति- विप्लव, बार-बार विकलता, आर्थिक संकट। क्या प्रभाव होते हैं? * विवाह, संतान, नौकरी और घर में बार-बार रुकावट।

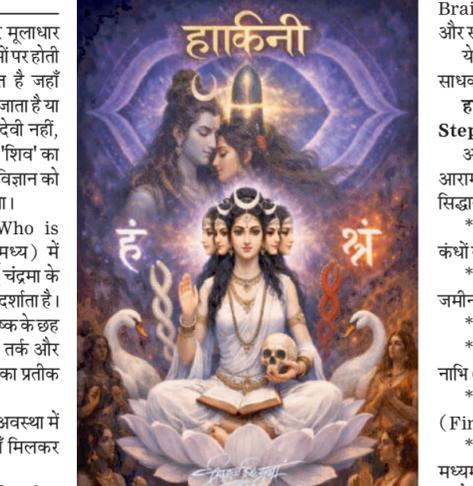
* अकारण भय, बुरे स्वप्न, पूजा में अग्रही, * परिवार में कलह और पीढ़ियों में रोम यदि कोई अपनी कुलदेवी या देवता नहीं जानता, तो क्या करें? * बुजुर्गों से पूछें। * अपने परिवार के सबसे बड़े सदस्य से पूछें, जैसे लम्बे वंश किसीकी पूजा होती थी विवाह से पहले? * परिवार के पुराने धिया, गौरव, पूजा सामग्री देखें * कई बार घर में रहते हुए भी लोग पवित्र, मूर्ति, सिंदूर, फूल की शैली संकेत देते हैं। * कुल पुरोहित या गोत्र-सम्बन्धी ब्राह्मण से पूछें * यदि आपके गोत्र या वंश के कुलपुरोहित का नाम ज्ञात है, उनसे संपर्क करें। * पूर्वजों की मूर्ति (जूल आन) जाएं। * वंशस्थित गांव का प्रमुख मंदिर और उसका देवी या देवता अक्सर आपका कुलदेवता हो सकता है। जब कुल ज्ञान न हो यदि सभी स्रोतों से जानकारी न मिले, तो शास्त्र सलाह देता है - यदि कुलदेवता ज्ञात हो, तो ईश्वर देव्य में दिव्य, शिव या देवी दुर्गा की आराधना की जा सकती है। हिंदू धर्म और शक्ति शास्त्र के अनुसार, जब सूर्य देव अपने गुरु

दोनों को शक्ति (धनु या गौण) में प्रवेश करते हैं, तो उस अर्चकों को खरमास या 'नलमास' कहा जाता है। यह स्थिति शांत में दो बार आती है एक बार मध्य दिसंबर में और दूसरी बार मध्य मार्च के दौरान।



आज्ञा चक्र की अधीश्वरी: माँ हाकिनी, शिव-शक्ति का मिलन और तंत्र का सबसे दुर्गम रहस्य

पिंकी कुंडू
साधकों! तंत्र जगत में चर्चा अक्सर मूलाधार की शक्ति या श्मशान की साधनाओं पर होती है, लेकिन 'हाकिनी' वह शक्ति है जहाँ आकर बड़े-बड़े योगियों का भी अहंकार टूट जाता है या फिर वे ईश्वर हो जाते हैं। यह केवल एक देवी नहीं, बल्कि चेतना का वह द्वार है जहाँ 'जीव' और 'शिव' का भेद मिटने लगता है। आइये, आज उस गूढ़ विज्ञान को समझते हैं जो सामान्य पुस्तकों में नहीं मिलता। 1. हाकिनी: स्वरूप और रहस्य (Who is Hakini?) हाकिनी 'आज्ञा चक्र' (भ्रूमध्य) में निवास करती है। उनका वर्ण 'शुद्ध श्वेत' (चंद्रमा के समान) है, जो सत्व गुण की चरम सीमा को दर्शाता है। * छह मुख: उनके छह मुख हैं, जो मस्तिष्क के छह प्रमुख कार्यों (स्मृति, बुद्धि, मन, अहंकार, तर्क और विवेक) और छह चक्रों की समेकित ऊर्जा का प्रतीक हैं। * हंसवाहिनी: वे शिव के साथ 'अभेद' अवस्था में हैं। यहाँ इडा, पिंगला और सुषुम्ना नाड़ियाँ मिलकर 'त्रिवेणी' बनाती हैं। * रहस्य: हाकिनी केवल विचार नहीं, बल्कि 'संकल्प शक्ति' की देवी हैं। जो साधक यहाँ सिद्ध हो जाता है, उसके मुख से निकला हर शब्द (वाकसिद्धि) ब्रह्मांड का नियम बन जाता है। 2. हाकिनी किसके साथ चलती है? (Her Divine Entourage) हाकिनी अकेली नहीं चलती। आज्ञा चक्र के भीतर एक अत्यंत गुप्त स्थान है जिसे 'इतर लिंग' (Itara Linga) कहा जाता है। * सहचरी शक्ति: हाकिनी यहाँ 'परम शिव' (शंभु) के साथ विलास करती हैं। * बीज मंत्र की शक्तियाँ: आज्ञा चक्र के दो दल हैं - 'हं' और 'क्षं'। 'हं' शिव है और 'क्षं' शक्ति। हाकिनी इन दोनों के संतुलन की डोर थामे रहती हैं। * यथिणी और योगिनी: 64 योगिनियों के मंडल में हाकिनी का स्थान सर्वोच्च नियंत्रक का है। जब हाकिनी सिद्ध होती हैं, तो निचली चक्रों की योगिनियाँ (डाकिनी, राकिनी, लाकिनी आदि) स्वतः ही साधक के अधीन हो जाती हैं। 3. साधना और सिद्धि: लाभ और भयानक खतर हाकिनी की साधना को 'रुद्र ग्रंथि भेदन' भी कहा जाता है। यह मार्ग तलवार की धार पर चलने जैसा है। * अद्भुत फायदे (Siddhis): * त्रिकाल दर्श: साधक को भूत, भविष्य और वर्तमान एक साथ देखने लगते हैं। * परकाया प्रवेश: सूक्ष्म शरीर को शरीर से अलग करने की क्षमता। * संकल्प सिद्धि: जो सोचा, वह घटित होने लगता है। * सर्वज्ञता: बिना पढ़े शास्त्रों और वेदों का ज्ञान स्वतः स्फुरित होने लगता है। * जानलेवा नुकसान (Risks): * अहंकार का विस्फोट: यहाँ साधक को लगता है कि मैं ही ब्रह्म हूँ। यदि गुरु का अंकुश न हो, तो साधक स्वयं को भगवान मानने लगता है और उसका पतन निश्चित है। (जैसे रावण) * मानसिक विक्षिप्तता: हाकिनी के जागरण से मस्तिष्क में अत्यधिक ऊर्जा (High Voltage) का प्रवाह होता है। यदि नाड़ियाँ शुद्ध नहीं हैं, तो ब्रेन हेमरेज,



पागलपन या कोमा की स्थिति बन सकती है। * रुद्र ग्रंथि: यह माया का आखिरी जाल है। यहाँ सिद्धियाँ साधक को फंसाकर मोक्ष से रोक देती हैं। 4. विभिन्न तंत्र मार्ग और हाकिनी * कौल मार्ग (Kaula Marg): कौल साधक हाकिनी को अपनी 'कुल शक्ति' मानते हैं। वे पंचमकार का उपयोग (प्रतीकात्मक या वास्तविक) करके चेतना को आज्ञा चक्र पर स्थिर करते हैं। उनके लिए हाकिनी 'गुरु-शक्ति' का ही रूप है। * वाम मार्ग (Aghor/Vama Marg): अघोरी साधक श्मशान में बैठकर जब कपाल क्रिया या ध्यान करते हैं, तो उनका लक्ष्य इसी आज्ञा चक्र को भेदना होता है। वे हाकिनी को 'भैरवी' रूप में पूजते हैं, जो भय और मोह का नाश करती हैं। * समय मत (Samaya Mat/Dakshinachara): यह सबसे सात्विक मार्ग है। यहाँ बाह्य पूजा नहीं होती। साधक केवल 'मानस पूजा' (Mental Worship) करता है। वह अपने मस्तिष्क के आकाश में हाकिनी का ध्यान करता है और 'सोहम' (Soham) मंत्र से उनमें लीन होता है। 5. किससे यह साधना करनी चाहिए? हाकिनी साधना 'शुरुआती' (Beginners) के लिए विषय के समान है। * केवल वह साधक जिसने मूलाधार से विशुद्ध तक के पाँचों तत्वों (पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश) को जीत लिया हो। * जिसका 'ब्रह्मचर्य' (उर्ध्वरेतस) सिद्ध हो। * जिसके सिर पर एक 'सशक्त गुरु' का हाथ हो, जो ऊर्जा अनियंत्रित होने पर उसे संभाल सके। * चेतावनी: बिना गुरु के आज्ञा चक्र पर जबरदस्ती ध्यान लगाने से आप अपनी याददाश्त खो सकते हैं या डिप्रेशन का शिकार हो सकते हैं। हाकिनी मुद्रा को 'मस्तिष्क की मुद्रा' (Mudra of the Mind) भी कहा जाता है। यह विज्ञान और आध्यात्म दोनों दृष्टियों से बहुत शक्तिशाली है। यह मुद्रा दाएँ और बाएँ मस्तिष्क (Left and Right

Brain Hemisphere) के बीच संतुलन बनाती है और समृति शक्ति (Memory) को तुरंत बढ़ाती है। ये विस्तृत और सही विधि दी गई है जिससे आप अपने साधकों को बता सकते हैं:- हाकिनी मुद्रा लगाने की विधि (Step-by-Step Method) आसन (Posture): सबसे पहले किसी आरामदायक ध्यानात्मक आसन (जैसे सुखासन, सिद्धासन या पद्मासन) में बैठ जाएं। * रीढ़ की हड्डी (Spine) बिल्कुल सीधी रखें और कंधों को ढीला छोड़ दें। * यदि आप कुर्सी पर बैठकर कर रहे हैं, तो पैर जमीन पर सीधे रखें। * हस्त स्थिति (Hand Position): * अपने दोनों हाथों को छाती (अनाहत चक्र) या नाभि (मणिपूर चक्र) के सामने लाएं। * दोनों हाथों की उंगलियों के पोरों (Fingertips) को आपस में मिलाएं। * ध्यान रहे: अंगूठा अंगूठे से, तर्जनी तर्जनी से, मध्यमा मध्यमा से... इसी क्रम में सभी उंगलियाँ एक-दूसरे को स्पर्श करें। * हाथों का आकार एक 'पिरामिड' या 'तंबू' (Tent) जैसा बन जाएगा। * दबाव: उंगलियों पर बहुत अधिक जोर नहीं डालना है, केवल हल्का स्पर्श (Light contact) होना चाहिए ताकि ऊर्जा का प्रवाह बना रहे। * दृष्टि और श्वास (Gaze & Breath): * आँखें बंद कर लें। * अपनी आंतरिक दृष्टि को आज्ञा चक्र (भ्रूमध्य-दोनों भौहों के बीच) पर केंद्रित करें। * श्वास गहरी और धीमी लें (Deep Breathing)। श्वास लेते समय जीभ को तालु (ऊपर) से लगाकर रखें तो और भी उत्तम है। समय (Duration): इसे किसी भी समय किया जा सकता है, * साधना के तौर पर रोजाना 30 से 45 मिनट करना उत्तम है। * तालुकाल लाभ के लिए (जैसे कुछ याद करने के लिए) इसे 2-3 मिनट करना भी प्रभावी होता है। तंत्र और विज्ञान क्या कहता है? वैज्ञानिक मत: हमारी उंगलियों के पोरों (Fingertips) में बहुत सारी नाड़ियाँ (Nerve endings) होती हैं जो सीधे मस्तिष्क से जुड़ी होती हैं। जब हम इन्हें आपस में मिलाते हैं, तो यह एक 'बंद सर्किट' (Closed Circuit) बनाता है, जिससे मस्तिष्क की ऊर्जा बाहर जाने के बजाय पुनः मस्तिष्क में लौटती है और ब्रेन पावर बढ़ती है। तांत्रिक रहस्य: तंत्र में दाहिना हाथ सूर्य (पिंगला) और बायाँ हाथ चंद्र (इडा) माना जाता है। जब उंगलियों के पोर मिलते हैं, तो शिव और शक्ति का मिलन होता है, जिससे सुषुम्ना नाड़ी में हलचल होती है और आज्ञा चक्र (हाकिनी का स्थान) सक्रिय होने लगता है। साधकों के लिए विशेष टिप यदि आप 'हाकिनी साधना' कर रहे हैं, तो इस मुद्रा को लगाकर मन ही मन 'हं' (Ham) या 'ॐ' बीज मंत्र का जाप करते हुए आज्ञा चक्र पर स्फेद रंग के प्रकाश का ध्यान करें। इससे संकल्प शक्ति कई गुना बढ़ जाती है।

भैरव बाबा को कालयुग का रक्षक

पिंकी कुंडू
भैरव बाबा की शक्ति "अदृश्य भयों, नकारात्मक ऊर्जा और बाधाओं" को काटने वाली मानी गई है। 1. भैरव = शिव का उग्र रूप भैरव, भगवान शिव का वह रूप है, जो दुष्ट शक्तियों का नाश करता है और भक्त की रक्षा करता है। 2. भैरव + शक्ति = * सुरक्षा * जागरूकता * अदृश्य खतरों से रक्षा * तांत्रिक ग्रंथों में कहा गया है - "शक्ति बिना भैरव अथूरा, भैरव बिना शक्ति निस्तेज"। 3. क्यों शनिवार विशेष है? हिन्दू कलेंडर के अनुसार: मार्गशीर्ष और पौष के शनिवार भैरव उपासना का सबसे ऊर्जावान समय होते हैं। इन दिनों लोग: * सरसों का तेल दीप * नारियल * कालेतिल अर्पित करते हैं। 4. प्रसिद्ध भैरव मंदिरों का महत्व: * काशी—कलभैरव मंदिर: "Kashi Guardian" कहा जाता है। * उज्जैन—काला भैरव: यहाँ की मदिरा-अर्पण परंपरा विश्व प्रसिद्ध है। * कोटि भैरव—जम्मू: रक्षण शक्ति के लिए प्रसिद्ध। * इन मंदिरों में शनिवार को भक्तों को भीड़कई गुना बढ़ जाती है। मुख्य संदेश: "भैरव बाबा = शक्ति के लिए प्रसिद्ध। भय, बाधा, नकारात्मकता—सबका अंत। जहाँ भैरव हैं, वहाँ सुरक्षा है।"



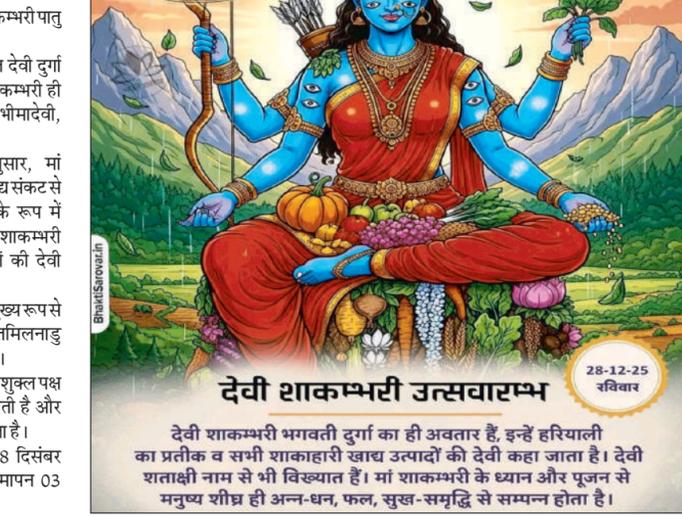
माँ भगवती का धरती को अकाल और खाद्य संकट से बचाने का देवी रूप माँ शाकंभरी

पिंकी कुंडू
शाकंभरी देवी माँ आदिशक्ति देवी दुर्गा का एक सौम्य अवनतार हैं। माँ शाकंभरी ही रक्तदंतिका, छिन्नमस्तिका, भीमादेवी, भामरी और श्री कनकदुर्गा हैं। पौराणिक कथाओं के अनुसार, माँ भगवती धरती को अकाल और खाद्य संकट से बचाने के लिए देवी शाकंभरी के रूप में अवतरित हुई थीं। देवी शाकंभरी वनस्पतियों, फलों और सब्जियों की देवी माना जाता है। शाकंभरी नवरात्र का यह पर्व मुख्य रूप से राजस्थान, कर्नाटक, महाराष्ट्र, तमिलनाडु और उत्तर प्रदेश में मनाया जाता है। शाकंभरी नवरात्रि पौष माह के शुक्ल पक्ष की अष्टमी तिथि के दिन शुरू होती है और पूर्णिमा के दिन इसका समापन होता है। इस वर्ष शाकंभरी नवरात्र 28 दिसंबर 2025 से शुरू होगा जिसका समापन 03 जनवरी 2026 को होगा।



शाकंभरी देवी माँ आदिशक्ति देवी दुर्गा का एक सौम्य अवनतार हैं। माँ शाकंभरी ही रक्तदंतिका, छिन्नमस्तिका, भीमादेवी, भामरी और श्री कनकदुर्गा हैं। पौराणिक कथाओं के अनुसार, माँ भगवती धरती को अकाल और खाद्य संकट से बचाने के लिए देवी शाकंभरी के रूप में अवतरित हुई थीं। देवी शाकंभरी वनस्पतियों, फलों और सब्जियों की देवी माना जाता है। शाकंभरी नवरात्र का यह पर्व मुख्य रूप से राजस्थान, कर्नाटक, महाराष्ट्र, तमिलनाडु और उत्तर प्रदेश में मनाया जाता है। शाकंभरी नवरात्रि पौष माह के शुक्ल पक्ष की अष्टमी तिथि के दिन शुरू होती है और पूर्णिमा के दिन इसका समापन होता है। इस वर्ष शाकंभरी नवरात्र 28 दिसंबर 2025 से शुरू होगा जिसका समापन 03 जनवरी 2026 को होगा।

शाकंभरी देवी माँ आदिशक्ति देवी दुर्गा का एक सौम्य अवनतार हैं। माँ शाकंभरी ही रक्तदंतिका, छिन्नमस्तिका, भीमादेवी, भामरी और श्री कनकदुर्गा हैं। पौराणिक कथाओं के अनुसार, माँ भगवती धरती को अकाल और खाद्य संकट से बचाने के लिए देवी शाकंभरी के रूप में अवतरित हुई थीं। देवी शाकंभरी वनस्पतियों, फलों और सब्जियों की देवी माना जाता है। शाकंभरी नवरात्र का यह पर्व मुख्य रूप से राजस्थान, कर्नाटक, महाराष्ट्र, तमिलनाडु और उत्तर प्रदेश में मनाया जाता है। शाकंभरी नवरात्रि पौष माह के शुक्ल पक्ष की अष्टमी तिथि के दिन शुरू होती है और पूर्णिमा के दिन इसका समापन होता है। इस वर्ष शाकंभरी नवरात्र 28 दिसंबर 2025 से शुरू होगा जिसका समापन 03 जनवरी 2026 को होगा।



शिक्षा पुरस्कार घोटाला : अब चुप्पी नहीं सहेंगे शिक्षक

■सम्मान के नाम पर व्यापार, शिक्षा की गरिमा पर सीधा हमला परिवहन विशेष न्यूज

पटना। शिक्षा को समाज की नैतिक रीढ़ माना जाता है। यहाँ से ईमानदारी, जिम्मेदारी और मूल्यों का संस्कार विकसित होता है। लेकिन हाल के वर्षों में शिक्षा के इसी पवित्र क्षेत्र में "पुरस्कार" जैसे शब्द को कुछ स्वाधीन और तथाकथित संगठनों द्वारा खुलेआम व्यापार बना दिया गया है। यह केवल एक स्थान या एक घटना की बात नहीं, बल्कि देशभर में फैलती जा रही एक गंभीर और संगठित प्रवृत्ति है।

कैसे रचा जा रहा है पुरस्कार का जाल.....
देशभर में सक्रिय कई तथाकथित शैक्षिक संगठन, फाउंडेशन और अवार्ड कमेटीयों शिक्षकों को पहले फोन, व्हाट्सएप या ई-मेल के माध्यम से यह बताती हैं कि उनका कार्य "असाधारण" है और उन्हें राष्ट्रीय अथवा अंतरराष्ट्रीय पुरस्कार के लिए चयनित किया गया है। शुरूआत में यह सूचना सम्मानजनक प्रतीत होती है, लेकिन इसके बाद असली खेल शुरू होता है।

रजिस्ट्रेशन फीस के नाम पर वसूली....
पुरस्कार समारोह से पहले रजिस्ट्रेशन फीस, प्रोसेसिंग चार्ज, सेरेमनी फीस या डॉक्यूमेंटेशन कॉस्ट के नाम पर शिक्षकों से मोटी राशि की माँग की जाती है। कई मामलों में यह राशि इतनी अधिक होती है कि एक ईमानदार शिक्षक के लिए देना न केवल कठिन बल्कि अपमानजनक भी होता है। बावजूद इसके सामाजिक प्रतिष्ठा और "सम्मान छूट जाने" के डर से कई शिक्षक मजबूरी में भुगतान कर देते हैं।

सम्मान नहीं, सौदा बन चुका है पुरस्कार....
शिक्षाविदों का कहना है कि जहाँ पैसे देकर मंच मिलता है, वहाँ योग्यता का कोई अर्थ नहीं रह जाता। जब भुगतान अनिवार्य हो जाता है, तो चयन की निष्पक्षता और पवित्रता स्मृत: समाप्त हो जाती है। यदि कोई संगठन वास्तव में शिक्षक को सम्मानित करना चाहता है, तो उसे बिना किसी शर्त और शर्त के सम्मान देना चाहिए।

शिक्षक बने ग्राहक, शिक्षा बनी बाजार....
इन आयोजनों का सबसे खतरनाक पहलू यह है कि वे शिक्षा को बाजार और शिक्षक को ग्राहक



बना देते हैं। इससे शिक्षक की गरिमा को ठेस पहुँचती है और समाज में यह संदेश जाता है कि सम्मान खरीदा जा सकता है।

उठाई है। टीचर्स ऑफ बिहार के फाउंडर शिव कुमार एवं टेकिनकल टीम लीडर ई. शिवेंद्र प्रकाश सुमन ने कहा कि शिक्षा के क्षेत्र में सम्मान को व्यापार बनाना न केवल शिक्षकों का अपमान है, बल्कि यह पूरे समाज की मूल्य-व्यवस्था पर सीधा हमला है। उन्होंने कहा कि जो संगठन पैसे लेकर पुरस्कार देते हैं, वे शिक्षा की सेवा नहीं, बल्कि उसका शोषण कर रहे हैं।

पदाधिकारियों का संयुक्त बयान....
वहीं संगठन के प्रदेश प्रवक्ता रंजेश कुमार एवं प्रदेश मीडिया संयोजक मृत्युंजय कुमार ने संयुक्त रूप से कहा कि ऐसे फर्जी और सशुल्क पुरस्कार आयोजनों पर तत्काल रोक लगनी चाहिए। उन्होंने शिक्षकों से अपील की कि वे किसी भी ऐसे पुरस्कार को स्वीकार न करें, जिसमें किसी भी प्रकार का शुल्क लिया जाए। उन्होंने यह भी कहा कि यदि इस प्रवृत्ति पर समय रहते रोक नहीं लगी, तो इससे शिक्षकों की सामाजिक प्रतिष्ठा को गहरी क्षति पहुँचेगी।

चमक-दमक के पीछे छिपा शोषण....
कई पुरस्कार समारोहों में भव्य मंच, बड़े-बड़े

वैनर, आकर्षक ट्रॉफी और सोशल मीडिया प्रचार के माध्यम से वास्तविकता को छिपा दिया जाता है। चमकदार प्रमाण-पत्रों के पीछे शिक्षक का मौन शोषण छिपा होता है।

स्पष्ट संदेश: पैसालिया तो सम्मान नहीं....
टीचर्स ऑफ बिहार ने स्पष्ट शब्दों में कहा— "अगर सम्मान देना है, तो बिना पैसे दीजिए; अगर पैसे लेने हैं, तो उसे सम्मान मत कहिए।" **सोशल मीडिया पर भी उठ रही आवाज....**
संगठन ने इस मुद्दे को हर मंच और हर जिले तक पहुँचाने के उद्देश्य से सोशल मीडिया पर #NoPaidAwards अभियान को तेज करने का आह्वान किया है।

सच्चा सम्मान वही है जो गरिमा बढ़ाए....
शिक्षाविदों का मानना है कि सच्चा पुरस्कार वही है जो शिक्षक के कार्य की गरिमा बढ़ाए, न कि उसकी जेब पर बोझ डाले। जब तक इस अंतर को समझें और शिक्षक वार्ड स्पष्ट रूप से नहीं समझेंगे, तब तक शिक्षा के क्षेत्र में ऐसे पुरस्कार घोटाले जन्म लेते रहेंगे।

“बांका को सिल्क उत्पादन और कतरनी चावल का ग्लोबल हब बनाने के लिए मुख्यमंत्री/उद्योग मंत्री को पत्र—राष्ट्रीय जन उद्योग व्यापार संगठन”

स्थान: बांका/पटना
“बांका को सिल्क उत्पादन और कतरनी चावल का ग्लोबल हब बनाने के लिए मुख्यमंत्री/उद्योग मंत्री को पत्र—राष्ट्रीय जन उद्योग व्यापार संगठन”

बांका: राष्ट्रीय जन उद्योग व्यापार संगठन के प्रदेश अध्यक्ष पंकज कुमार ने बांका जिले की औद्योगिक दशा सुधारने और स्थानीय संसाधनों को विश्व स्तर पर पहचान दिलाने के लिए मुख्यमंत्री नीतीश कुमार और उद्योग मंत्री दिलीप जायसवाल को एक विस्तृत मांग पत्र भेजा है। प्रदेश अध्यक्ष पंकज कुमार ने कहा कि बांका जिला तसर सिल्क (रेशम) और कतरनी चावल का प्राकृतिक केंद्र है,

लेकिन आजादी के इतने वर्षों बाद भी यहाँ के किसानों और बुनकरों को बिचौलियों के भरोसे रहना पड़ता है। उन्होंने मांग की है कि बांका को भागलपुर के 'सप्लाई पार्टनर' के बजाय एक स्वतंत्र 'रेशम उत्पादन एवं रीलिंग हब' के रूप में विकसित किया जाए।

प्रेस वार्ता के दौरान प्रदेश अध्यक्ष ने मुख्य रूप से चार मांगों पर जोर दिया:
1. बांका में 'कोकन बैंक' और आधुनिक धागा बनाने की मशीनें (Reeling Units) लगाई जाएं ताकि महिलाओं को घर के पास रोजगार मिले।
2. कतरनी चावल की ब्रांडिंग और निर्यात के लिए बांका में ही 'एक्सपोर्ट फॅसिलिटी सेंटर' खोला जाए।
3. जिले के युवाओं को मुख्यमंत्री

उद्यमी योजना के तहत प्राथमिकता मिले ताकि पलायन पर रोक लग सके।
4. स्थानीय उत्पादों को ई-कॉमर्स (Amazon/Flipkart) से जोड़ने के लिए सरकारी सहायता मिले।
पंकज कुमार ने कहा, रेशमारा संगठन बांका के हर गांव के उद्यमी और किसान के साथ खड़ा है। अगर सरकार बांका में प्रोसेसिंग यूनिट्स लगाती है, तो यहाँ के युवाओं को दिल्ली-पंजाब जाने की जरूरत नहीं पड़ेगी। हमारा लक्ष्य बांका के उत्पाद को दुनिया के बाजार तक पहुँचाना और जिले के मान-सम्मान को बढ़ाना है।
इस अवसर पर संगठन के कई अन्य पदाधिकारी भी मौजूद रहे और उन्होंने इस मुद्दे को गांव-गांव तक ले जाने का संकल्प लिया।



आया नया साल

सभी रहे सुखी, स्वस्थ, समृद्ध और खुशहाल, आशाओं के नव दीप जलाए आया नया साल, चेहरा पर झलके नूर और चुस्त-दुरुस्त हो हाल, मेहनत और लगन से करना है सबको कमाल।

ढेरों शुभकामनाओं का भेजा हमने मधुर संदेशा, होगा जरूर कुछ तो बढ़िया है ये हमको अंदेशा, अपनों के साथ से जीवन में होती तरक्की हमेशा, मिल जुलकर हम आगे बढ़ेंगे साथ चलेंगे हमेशा।

बड़ो से सदैव रहती है आशीर्वाद पाने की आस, खूब भरी दुआओं में बसी अपनेपन की मिठास, खुद पर करना होगा हमें पूरी सच्चाई से विश्वास, संकल्प होंगे तभी पूरे संग उन्नत होगा विकास।

हर दिन गूँजेगी सरगम रआनंदर खुशियों वाली, खुशियाँ छापेंगी हर आँगन झूमेंगी मन की डाली, आत्मिक संतुष्ट, प्रसन्नचित और सौभाग्यशाली, बच्चा, बूढ़ा, जवान हर शाख्स होगा शक्तिशाली।

सभी प्रियजनों को है हमारा नमन और साधुवाद, और भी मधुर होते जाएं हमारे आपके बीच संवाद, 2026 अंग्रेजी नव वर्ष की सभी को मुबारकबाद, सब पर बना रहे हे मातारानी आपका आशीर्वाद।

– मोनिका डागा “आनंद”, चेन्नई, तमिलनाडु

कैलेंडर

कोई दस्तक दे रहा है दरवाजे पर। दिल ने आदतन तुम्हारा नाम लिया।

उम्मीद ने झिझकते हुए कुंडी हिलाई, यादों ने खिड़की से झाँककर देखा।

मगार बाहर न तुम्हारी आहट थी, न वही चुप्पी जो सिर्फ तुम लाते थे।

बाहर खड़ा था चमकदार झूठ, हाथ में कैलेंडर, होंटों पर मुस्कान।

कितना अजीब है— समय आता रहा, साल बदलते रहे, तुम नहीं आए।

– डॉ सत्यवान सौरभ

दोस्ती, राजनीति और दूरी: बांग्लादेश-भारत संबंधों की बदलती कहानी

राजेश जैन

बांग्लादेश और भारत के रिश्ते 1971 में बांग्लादेश की आजादी के साथ शुरू हुए। उस समय भारत की भूमिका, विशेष रूप से पाकिस्तान के साथ युद्ध में बांग्लादेश का समर्थन, इतिहास की एक निर्णायक घटना थी। लेकिन आज यही रिश्ते तनाव और अविश्वास की गहराई तक पहुँच चुके हैं। 2024 के अगस्त में शेख हसीना का सत्ता से हटना और बांग्लादेश में अस्थायी सरकार का गठन, दोनों देशों के बीच माने जाने वाले स्वर्णिम युग के पतन का प्रतीक बन गया है।

शेख हसीना और अवामी लीग: भारत की नीति की उत्पत्ति और सीमा

1971 की युद्धभूमि से लेकर 2023-24 तक बांग्लादेश में शेख हसीना और उनकी पार्टी अवामी लीग को भारत के निरंतर समर्थन की नीति रही। यह समर्थन केवल वैचारिक सम्मान पर नहीं बल्कि रणनीतिक मजबूरी पर आधारित था। इस बीच 1975 के बाद सेना के द्वारा सत्ता पर कब्जे और जिया-उर-रहमान तथा बाद में हुसैन मोहम्मद इरशाद के शासन के बावजूद भारत के हित बुरी तरह प्रभावित नहीं हुए। भारत ने अवामी लीग को उस समय भी समर्थन दिया जब वह राजनीतिक रूप से कमजोर थी, क्योंकि भारत की नजर में अवामी लीग ही एक स्थिर और भारत-समर्थक राजनीतिक शक्ति थी।

शेख हसीना ने भारत के समर्थन के साथ बांग्लादेशी राजनीति में मजबूती प्राप्त की। अवामी लीग का सत्ता में बने रहना भारत की नीति का मुख्य आधार बन गया। इस कारण बांग्लादेश की राजनीति में अवामी लीग का प्रभुत्व भारत की नीतिगत प्राथमिकता बन गया। परंतु इस गठजोड़ की एक प्रमुख खामी यह रही कि इससे बांग्लादेश की राजनीतिक विविधता और जनता के बीच एक पारंपरिक महत्व नहीं मिला। भारत ने एक राजनीतिक दल के साथ गहरा जुड़ाव बना लिया और इसके बाहर की विचारधाराएं, विपक्षी पार्टियाँ उपेक्षित महसूस करने लगीं।

यही वह बिंदु है, जहाँ बड़ा प्रश्न खड़ा होता है कि क्या भारत ने बदलती वास्तविकताओं को पर्याप्त गंभीरता से समझा? क्या उसने यह महसूस किया कि बांग्लादेश की जनता का समर्थन किसी एक व्यक्ति या परिवार तक सीमित नहीं रह सकता? इसका उत्तर 2024 के जनआंदोलन में स्पष्ट दिखाई देता है जब जनता सड़कों पर उतर आई।

2024 का जनविरोध और अविश्वास का उभार

जुलाई 2024 में बांग्लादेश में जनविरोध की लहर उठी और देखते ही देखते इतनी व्यापक हो गई कि शेख हसीना के इस्तीफे और सत्ता परिवर्तन की मांगें उठने लगीं। पांच अगस्त को शेख हसीना को भारत आना पड़ा। यह घटना केवल राजनीतिक शरण का मामला नहीं रही, बल्कि संकेत बन गई कि



बांग्लादेश की राजनीति अब मित्र-शत्रु के पुराने समीकरणों से कहीं अधिक जटिल हो चुकी है। यह विरोध केवल शेख हसीना के खिलाफ नहीं था, बल्कि उस राजनीतिक ढाँचे के खिलाफ भी था जिसे लंबे समय से भारत समर्थित सत्ता संरचना के रूप में देखा जा रहा था। विपक्षी दलों और उनके समर्थक समूहों का आरोप रहा कि शेख हसीना भारत के समर्थन से सत्ता में बनी रही। इस धारणा ने भारत-विरोधी भावनाओं को और हवा दी।

जब भारत शरणस्थली बनकर सामने आया, तो भारत-बांग्लादेश मित्रता की पारंपरिक नींवों पर भी सवाल उठे। यह विश्वास कमजोर पड़ा कि भारत बांग्लादेश की आंतरिक राजनीति में निष्पक्ष भूमिका निभा सकता है। ढाका की सड़कों पर उभरती भावनाएं संकेत देती हैं कि बांग्लादेशी समाज अब केवल भारत के साथ करीबी रिश्तों के आधार पर किसी नेतृत्व की वैधता स्वीकार करने को तैयार नहीं है।

ऐतिहासिक अविश्वास और द्विपक्षीय चिंताएँ

इतिहास पर नजर डालें तो अविश्वास के बीच काफी पहले बीए जा चुके थे। संबंध सतही तौर पर भले संघर्षपूर्ण न रहे हों, लेकिन भीतर से तनाव हमेशा मौजूद रहा। भारत की धारणा रही कि बांग्लादेश ने स्वतंत्रता संग्राम में उसके योगदान को पर्याप्त महत्व नहीं दिया। वहीं बांग्लादेश में यह भावना रही कि भारत ने केवल अपने सामरिक हितों के लिए हस्तक्षेप किया और उसे बराबरी के साझेदार के रूप में कम ही माना।

सैन्य शासन के दौर में ढाका द्वारा भारत के पूर्वोत्तर के उपग्रामी समूहों को परोक्ष सहयोग देने के आरोपों ने संदेह और बढ़ाया। 1980 के दशक में सीमाओं पर कड़ी सुरक्षा और अवैध प्रवासन पर नियंत्रण की भारतीय नीति ने भी बांग्लादेश में भारत-विरोधी भावनाओं को मजबूत किया। सहयोग के स्थान पर कई बार उलझन और कटुता बढ़ती रही। इन ऐतिहासिक कारणों ने आज की जटिल परिस्थिति की नींव तैयार की।

वर्तमान संकट और भविष्य की राह

2025 के इस दौर में संबंध केवल राजनीतिक नेतृत्वों के बीच का विषय नहीं रह गए हैं। वे अब सार्वजनिक भावनाओं, सुरक्षा चिंताओं और कूटनीतिक तनावों का समुच्चय बन चुके हैं। पिछले लगभग डेढ़ वर्ष से तनाव लगातार बढ़ा है। वीजा सेवाओं का निलंबन और तीखे आधिकारिक बयान इसके संकेत हैं कि संस्थागत स्तर पर भी दरारें उभर चुकी हैं।

ढाका की नजर में भारत अब केवल बड़ा पड़ोसी नहीं, बल्कि वह शक्ति है जिसका प्रभाव उसकी आंतरिक राजनीति को प्रभावित करता है। यदि बांग्लादेश नेशनलिस्ट पार्टी (बीएनपी) सत्ता में आती है, तो संबंध किस दिशा में जाएंगे, यह एक महत्वपूर्ण प्रश्न है। वह अधिक सामानता और पारस्परिक सम्मान पर आधारित रिश्ते की अपेक्षा कर सकती है। फिर भी दोनों देशों के साझा इतिहास, सांस्कृतिक निकटता और आर्थिक हित इस रिश्ते को संभालने का मजबूत आधार प्रदान करते हैं। संवाद, पारदर्शिता और पारस्परिक सम्मान ही विश्वास बहाली के उपकरण हैं। भारत के लिए यह आवश्यक है कि वह बांग्लादेश को केवल रणनीतिक दृष्टि से नहीं, बल्कि एक संप्रभु देश के रूप में देखे।

भारत-बांग्लादेश संबंध कई दशकों की कूटनीति, अविश्वास, सामरिक हितों और अल्पविक हस्तक्षेपों का परिणाम है। जमता की वास्तविक राजनीतिक भावनाओं की समझ, परस्पर सम्मान और विश्वास की बहाली ही इन संबंधों को फिर से स्वर्णिम दौर की ओर ले जा सकती है। यदि दोनों देश नई सोच, धैर्य और परिपक्वता के साथ आगे बढ़ें, तो यह साझेदारी समय की धारा में खोने के बजाय भविष्य की स्थिरता का आधार बन सकती है।

(लेखक स्वतंत्र पत्रकार हैं।)

बाल तस्करी और न्याय की परीक्षा

- डॉ प्रियंका सौरभ

भारत में बाल तस्करी आज केवल एक सामाजिक विकृति नहीं, बल्कि एक सुव्यवस्थित, बहुस्तरीय और संगठित आपराधिक तंत्र का रूप ले चुकी है। यह अपराध उन कमजोर सामाजिक-आर्थिक संरचनाओं में जड़ें जमाता है जहाँ गरीबी, अशिक्षा, विस्थापन, लैंगिक असमानता और प्रशासनिक उदासीनता एक साथ मौजूद रहती हैं। बाल तस्करी की भयावहता केवल इस तथ्य में निहित नहीं है कि बच्चे शोषण का शिकार बनते हैं, बल्कि इस बात में भी है कि यह अपराध अत्यंत कुशलता से कानून और न्यायिक प्रक्रिया की सीमाओं का लाभ उठाता है। इसी कारण, कड़े कानूनी प्रावधानों और अंतरराष्ट्रीय दायित्वों के बावजूद भारत में बाल तस्करी से जुड़े मामलों में दोषसिद्ध दर चिंताजनक रूप से कम बनी हुई है।

बाल तस्करी को स्तरित संगठित अपराध कहा जाना मात्र एक सैद्धांतिक अभिव्यक्ति नहीं है, बल्कि यह इसके कार्य-तंत्र की वास्तविक प्रकृति को दर्शाता है। इस अपराध में सामान्यतः कोई एक केंद्रीय संसंचालक नहीं होता, बल्कि अनेक स्वतंत्र लेकिन परस्पर पूरक इकाइयों का कार्य करती हैं। भर्ती करने वाला व्यक्ति प्रायः स्थानीय स्तर पर सक्रिय होता है, जो बच्चों या उनके अभिभावकों को शिक्षा, रोजगार, बेहतर जीवन या विवाह जैसे झूठे वादों के माध्यम से फुसलाता है। इसके बाद परिचय से जुड़े एजेंट, आश्रय उपलब्ध कराने वाले नेटवर्क, दस्तावेजों की जालसाजी करने वाले समूह और अंततः शोषण करने वाले व्यक्ति या संस्थाएं अलग-अलग स्तरों पर सक्रिय होती हैं। इन सभी के बीच प्रत्यक्ष संपर्क न्यूनतम होता है, जिससे पूरे अपराध तंत्र को एक सूत्र में बांधकर न्यायालय के समक्ष प्रस्तुत करना अत्यंत कठिन हो जाता है।

इस स्तरित संरचना का सबसे बड़ा लाभ अपराधियों को यह मिलता है कि प्रत्येक कड़ी के कार्य को सीमित भूमिका तक प्रतिबंधित दिखा सकती है। कोई स्वयं को केवल 'मददगार', कोई 'दलाल', तो कोई 'नियोक्ता' बताकर अपनी आपराधिक मंशा से पल्ला झाड़ लेता है। परिणामस्वरूप, अभियोजन पक्ष के लिए आपराधिक षड्यंत्र, साझा और संगठित

अपराध को सिद्ध करना लगभग असंभव हो जाता है। यह जटिलता तब और बढ़ जाती है जब तस्करी अंतर-राष्ट्रीय या अंतरराष्ट्रीय स्वरूप ग्रहण कर लेती है, जहाँ विभिन्न राज्यों के कानून, पुलिस तंत्र और न्यायिक प्रक्रियाएँ एक-दूसरे से समन्वित नहीं हो पातीं।

आधुनिक समय में डिजिटल प्रौद्योगिकी ने इस अपराध को और अधिक अदृश्य बना दिया है। एनर्जेटिक सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म, गुप्त मैसेजिंग ऐप्स और डिजिटल भुगतान प्रणालियों के माध्यम से तस्करी न केवल बच्चों की आवाजही को नियंत्रित करती है, बल्कि साक्ष्यों को भी शीघ्र नष्ट कर देती है। इस स्थिति में पारंपरिक जाँच पड़तालियाँ अपर्याप्त सिद्ध हो चुकी हैं और अभियोजन का पूरा बोझ अंततः पीड़ित की गवाही पर आ टिकता है।

यहाँ से बाल तस्करी से जुड़े मामलों में साक्ष्यगत चुनौतियों की वास्तविक समस्या प्रारंभ होती है। नाबालिग पीड़ित अक्सर भय, मानसिक आघात, सामाजिक कलंक और आर्थिक निर्भरता के कारण स्वतंत्र रूप से अपनी बात रखने की स्थिति में नहीं होते। लंबे समय तक चली शारीरिक और मानसिक यातना उनके स्मृति-तंत्र को प्रभावित करती है, जिसके कारण उनकी गवाही में असंगतियाँ, रिक्तताएँ और विरोधाभास स्वाभाविक रूप से उत्पन्न होते हैं। इसके बावजूद, अपराधियों का क्रम में अपराधियों का विचरणों के स्वभाविक मानवीय प्रतिक्रिया के रूप में देखा जाता है, न कि झूठ या मनगढ़ंत कहानी के प्रमाण के रूप में। इससे अभियोजन को यह अवसर मिलता है कि वह अपराध की व्यापक संरचना को परिस्थितिजन्य साक्ष्यों और पीड़ित के कथन के संयुक्त मूल्यांकन के आधार पर प्रस्तुत कर सके।

'पीड़ित गवाह' का दर्जा यह भी सुनिश्चित करता है कि शिकायत में देरी को स्वचालित रूप से गवाही की कमजोरी न माना जाए। भय, सामाजिक दबाव और मानसिक आघात को न्यायिक संज्ञान में लेते हुए अब देरी को परिस्थितिजन्य वास्तविकता के रूप में समझा जाता है। यह परिवर्तन विशेष रूप से बाल तस्करी जैसे अपराधों में महत्वपूर्ण है, जहाँ पीड़ित की चुप्पी स्वयं अपराध

शिकायत दर्ज करने में देरी भी एक बड़ी समस्या रही है। सामाजिक भय, परिवार की प्रतिष्ठा, आर्थिक अल्पसंख्य और अपराधियों की धमकियों के कारण पीड़ित या उनके अभिभावक प्रायः लंबे समय तक चुप रहते हैं। न्यायालयों द्वारा इस देरी को संदेह की दृष्टि से देखा जाना अभियोजन को और कमजोर कर देता है। इसके अतिरिक्त, अपराध की पूरी शृंखला को क्रमबद्ध रूप से न धना पाना, विशेषकर तब जब अपराध कई महीनों या वर्षों तक चला हो, पीड़ित की गवाही को तकनीकी आधार पर खारिज करने का कारण बनता रहा है।

इसी पृष्ठभूमि में सर्वोच्च न्यायालय द्वारा नाबालिगों को 'पीड़ित गवाह' के रूप में मान्यता देने का निर्देश भारतीय अपराधिक न्याय प्रणाली में एक गुणात्मक परिवर्तन का संकेत देता है। यह निर्देश यह स्वीकार करता है कि बाल तस्करी के शिकार बच्चे अपराध के सहभागी नहीं, बल्कि संरचनात्मक शोषण के शिकार हैं। 'पीड़ित गवाह' की अवधारणा गवाही के मूल्यांकन के पारंपरिक मानकों को मानवीय यथार्थ के साथ जोड़ती है और न्यायालय को अपराध की गवाही के लिए आवश्यक है कि आघात-ग्रस्त स्मृति पूर्णतः तार्किक या रैखिक नहीं होती।

इस न्यायिक दृष्टिकोण के तहत अब यह अनिवार्य नहीं रह जाता कि पीड़ित की गवाही हर बिंदु पर पूर्णतः सुसंगत और त्रुटिहीन हो। सूक्ष्म विरोधाभास, प्रमाणों के क्रम में अपराधियों का विचरणों के स्वभाविक मानवीय प्रतिक्रिया के रूप में देखा जाता है, न कि झूठ या मनगढ़ंत कहानी के प्रमाण के रूप में। इससे अभियोजन को यह अवसर मिलता है कि वह अपराध की व्यापक संरचना को परिस्थितिजन्य साक्ष्यों और पीड़ित के कथन के संयुक्त मूल्यांकन के आधार पर प्रस्तुत कर सके।

'पीड़ित गवाह' का दर्जा यह भी सुनिश्चित करता है कि शिकायत में देरी को स्वचालित रूप से गवाही की कमजोरी न माना जाए। भय, सामाजिक दबाव और मानसिक आघात को न्यायिक संज्ञान में लेते हुए अब देरी को परिस्थितिजन्य वास्तविकता के रूप में समझा जाता है। यह परिवर्तन विशेष रूप से बाल तस्करी जैसे अपराधों में महत्वपूर्ण है, जहाँ पीड़ित की चुप्पी स्वयं अपराध

की निरंतरता का परिणाम होती है।

इसके अतिरिक्त, यह दृष्टिकोण स्मृति-लोप और विखंडित स्मृति को भी वैध मान्यता देता है। आघात के कारण उत्पन्न स्मृति-विघटन में पीड़ित को अपराध की पूरी शृंखला याद न रह पाना स्वाभाविक है। पहले जहाँ यह स्थिति अभियुक्त के पक्ष में जाती थी, वहीं अब न्यायालयों को यह विवेक प्राप्त होता है कि वे गवाही के मूल भाव और संदर्भों को महत्व दें, न कि केवल तकनीकी पूर्णता को।

इस प्रकार, 'पीड़ित गवाह' की अवधारणा न्यायिक प्रक्रिया को औपचारिकता-प्रधान से पीड़ित-केंद्रित यथार्थवाद की ओर ले जाती है। यह परिवर्तन न केवल दोषसिद्ध दर बढ़ाने की क्षमता रखता है, बल्कि समर्थित और संपन्न के साथ सुना संवेदना और समझ के साथ सुना संवेदना है, तभी न्याय प्रणाली अपने वास्तविक उद्देश्य की पूर्ति कर पाती है।

फिर भी, यह स्वीकार करना आवश्यक है कि केवल न्यायिक निर्देश पर्याप्त नहीं हैं। यदि 'पीड़ित गवाह' की अवधारणा को प्रभावी बनाना है, तो इसके साथ-साथ जाँच एजेंसियों की संवेदनशीलता, अभियोजकों का प्रशिक्षण, गवाह संरक्षण तंत्र और पीड़ितों का पुनर्वास भी उतना ही आवश्यक है। बिना सामाजिक-आर्थिक पुनर्स्थापन के, पीड़ित पुनः शोषण के चक्र में फँस सकता है, जिससे न्यायिक उपलब्धियाँ खोखली सिद्ध होंगी। अतः, बाल तस्करी के विरुद्ध संघर्ष केवल कानून का प्रश्न नहीं, बल्कि नैतिक और सामाजिक उत्तरदायित्व का विषय है। सर्वोच्च न्यायालय का 'पीड़ित गवाह' संबंधी निर्देश इस दिशा में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर है, जो यह संकेत देता है कि न्याय अब केवल प्रक्रिया का पालन नहीं, बल्कि पीड़ित के अनुभव को समझने का प्रयास भी है। यदि इस दृष्टिकोण को सशक्त संस्थागत समर्थन प्राप्त होता है, तो यह भारत में बाल तस्करी जैसे स्तरित संगठित अपराधों के विरुद्ध एक प्रभावी हथियार सिद्ध हो सकता है और न्याय की अवधारणा को वास्तव में मानवीय बना सकता है।

वर्ष 2025 : जब भारत ने प्रतिक्रिया नहीं, दिशा दी

प्रो. आरके जैन "अरिजीत"

वर्ष 2025 भारत के इतिहास में एक ऐसे निर्णायक मोड़ के रूप में अंकित हुआ, जहाँ अंधकार, संकट और षड्यंत्रों के बीच राष्ट्र ने अपनी आंतरिक शक्ति और आत्मविश्वास का विराट प्रदर्शन किया। यह वर्ष केवल चुनौतियों का नहीं, बल्कि उनके उत्तर देने की भारतीय क्षमता का प्रतीक बना। आतंकवाद की क्रूर घटनाएँ, जलवायु परिवर्तन की भयावह मार और वैश्विक अस्थिरता—इन सबने देश की परीक्षा ली। किंतु भारत विचलित नहीं हुआ। उसने साहस, विज्ञान, नीति और संकल्प के सहारे हर मोर्चे पर जवाब दिया। ऑपरेशन सिंदूर की निर्णायक कार्रवाई, नवीकरणीय ऊर्जा में ऐतिहासिक उपलब्धियों और रक्षा आत्मनिर्भरता की ठोस प्रगति ने यह स्पष्ट कर दिया कि भारत अब प्रतिक्रिया देने वाला नहीं, दिशा तय करने वाला राष्ट्र बन चुका है। 2025 ने सिद्ध किया कि भारत संकटों को बोझ नहीं, अवसर में बदलने की क्षमता रखता है।

आतंकवाद के विरुद्ध संघर्ष में 2025 एक कठोर लेकिन निर्णायक वर्ष रहा। अप्रैल में पहलगाव की बैसारन घाटी में हुए नृशंस आतंकी हमले ने पूरे देश को झकझोर दिया, जहाँ निर्दोष

पर्यटकों की हत्या ने मानवता को शर्मसार किया। इसके बाद नवंबर में दिल्ली के लाल किले के निकट का बम विस्फोट ने राजधानी की सुरक्षा को चुनौती दी। इन घटनाओं ने एक बार फिर पाकिस्तान-प्रायोजित आतंकवाद के असली चेहरे को उजागर किया। परंतु भारत ने शोक को शक्ति में बदला। मई में प्रारंभ हुआ 'ऑपरेशन सिंदूर' केवल सैन्य कार्रवाई नहीं, बल्कि राष्ट्रीय संकल्प का उद्घोष था। पाकिस्तान और पीओके में आतंकी ठिकानों पर सटीक प्रहार कर भारत ने स्पष्ट संदेश दिया कि अब सहनशीलता नहीं, निर्णायक प्रतिकार होगा। स्वदेशी हथियारों और उन्नत खुफिया तंत्र ने इस अभियान को ऐतिहासिक बना दिया।

नक्सलवाद के विरुद्ध भी वर्ष 2025 निर्णायक सिद्ध हुआ। वर्षों से विकास को बाधित कर रहे उग्रवादी नेटवर्क पर व्यापक और सुनियोजित कार्रवाई की गई। सुरक्षा बलों के संयुक्त अभियानों में अनेक दुर्दंत नक्सली मारे गए या आत्मसमर्पण को विवश हुए। प्रभावित क्षेत्रों में सड़क, शिक्षा, स्वास्थ्य और डिजिटल सेवाओं का विस्तार हुआ, जिससे स्थानीय जनता का विश्वास लोकतांत्रिक व्यवस्था में मजबूत हुआ। सरकार की "जीरो

टॉलरेंस" नीति केवल नारा नहीं रही, बल्कि जमीन पर परिणाम देती दिखाई दी। आतंक और उग्रवाद के विरुद्ध यह स्पष्ट हो गया कि भारत अब रक्षात्मक मुद्रा में नहीं, बल्कि रणनीतिक बढ़त की स्थिति में है। राष्ट्र की सुरक्षा अब केवल सीमाओं तक सीमित नहीं रही, बल्कि विचारधारा और व्यवस्था दोनों स्तरों पर सुदृढ़ हुई है।

जलवायु परिवर्तन ने 2025 में अभूतपूर्व विनाश के रूप में दस्तक दी। वर्ष के लगभग पूरे कालखंड में चरम मौसमी घटनाएँ दर्ज की गईं—भीषण गर्मी, विनाशकारी बाढ़, चक्रवात और आकाशीय बिजली ने 4,419 से अधिक जानें लीं और करोड़ों लोगों को प्रभावित किया। उत्तर-पश्चिम भारत में तापमान 50 डिग्री के पार चला गया, जबकि कई राज्यों में बाढ़ से व्यापक विस्थापन हुआ। 17.4 मिलियन हेक्टेयर फसलें बर्बाद हुईं, जिससे खाद्य सुरक्षा पर दबाव बढ़ा। यह संकट केवल प्राकृतिक नहीं था, बल्कि वैश्विक स्तर पर विकसित देशों द्वारा किए गए अत्यधिक उत्सर्जन का परिणाम भी था। इसके बावजूद भारत ने पीड़ित की भूमिका नहीं अपनाई, बल्कि समाधानकर्ता की भूमिका निभाई। आपदा प्रबंधन, राहत और पुनर्वास में अभूतपूर्व समन्वय देखने को मिला।



इसी चुनौती के बीच भारत ने नवीकरणीय ऊर्जा के क्षेत्र में ऐतिहासिक उपलब्धि दर्ज की। 2030 तक 50 प्रतिशत ऊर्जा गैर-जीवाश्म स्रोतों से प्राप्त करने का लक्ष्य भारत ने 2025 में ही हासिल कर लिया। सौर और पवन ऊर्जा में रिकॉर्ड वृद्धि हुई और अकेले एक वर्ष में लगभग 50 गीगावॉट क्षमता जोड़ी गई। राजस्थान और गुजरात वैश्विक स्तर के सौर ऊर्जा केंद्र के रूप में उभरे। अंतरराष्ट्रीय मंचों पर भारत ने जलवायु न्याय की आवाज बुलंद की और विकसित देशों से वित्तीय व तकनीकी सहयोग की मांग दोहराई। भारत ने यह सिद्ध किया कि विकासशील राष्ट्र भी पर्यावरणीय नेतृत्व कर सकते हैं। हरित हाइड्रोजन, इलेक्ट्रिक मोबिलिटी और ऊर्जा भंडारण में निवेश ने भविष्य की नींव मजबूत की।

रक्षा क्षेत्र में 2025 आत्मनिर्भर भारत की परिकल्पना का स्वर्णिम अध्याय बनकर उभरा। रक्षा बजट ऐतिहासिक रूप से 6.81 लाख करोड़ रुपये तक पहुँचा, जिसमें अधिकांश राशि स्वदेशी खरीद के लिए निर्धारित की गई। पाँचवीं पीढ़ी के स्वदेशी स्टेल्थ फाइटर एएमसीए (एडवांस्ड मीडियम कॉम्बैट एयरक्राफ्ट) को मंजूरी मिली, वहीं आकाश-पनजी और ब्रह्मोस मिसाइलों के निर्यात ने भारत की वैश्विक साख बढ़ाई। 'मेक इन इंडिया' के तहत निजी क्षेत्र की भागीदारी तेज हुई और रक्षा उत्पादन 1.60 लाख करोड़ रुपये के पार पहुँचा। निर्यात लगभग 23,000 करोड़ तक पहुँचाने का प्रमाण है कि भारत अब आयातक नहीं, बल्कि विश्वसनीय रक्षा आपूर्तिकर्ता बन रहा है। इससे रोजगार सृजन हुआ और सीमाओं की सुरक्षा और अधिक अभेद्य बनी।

आर्थिक और सामाजिक मोर्चे पर भी 2025 उपलब्धियों से भरा रहा। प्रयागराज महाकुंभ में 66 करोड़ से अधिक श्रद्धालुओं की सहभागिता ने सांस्कृतिक एकता और संगठन क्षमता का अद्भुत उदाहरण प्रस्तुत किया। खेलों में भारतीय खिलाड़ियों ने अंतरराष्ट्रीय मंचों पर गौरव बढ़ाया। राजनीतिक स्थिरता ने नीतिगत निरंतरता

सुनिश्चित की, जिससे सुधारों की गति मिली। जीएसटी प्रणाली में सुधार, श्रम कानूनों का सरलीकरण और सेमीकंडक्टर उद्योग में निवेश ने आर्थिक आधार को मजबूत किया। यद्यपि एजिशन क्षेत्र और प्रदूषण जैसे चुनौतियाँ बनी रहीं, फिर भी भारत की जीडीपी वृद्धि दर विश्व में अग्रणी रही। डिजिटल अर्थव्यवस्था, स्टार्टअप संस्कृति और ग्रीन हाइड्रोजन मिशन ने लाजों नए अवसर पैदा किए।

समग्र रूप से 2025 यह संदेश देता है कि भारत विपत्तियों से भयभीत होने वाला राष्ट्र नहीं है। वह संकटों को आत्ममंथन, सुधार और प्रगति के अवसर में बदलना जानता है। पहलगाव की पीड़ा से लेकर ऑपरेशन सिंदूर की दृढ़ता तक, जलवायु संघर्ष से लेकर ऊर्जा क्रांति तक और रक्षा आत्मनिर्भरता से लेकर सामाजिक एकता तक—हर क्षेत्र में भारत की चेतना जाग्रत दिखाई दी। महाकुंभ की सामूहिक शक्ति और तकनीकी उन्नति की गति ने यह सिद्ध किया कि देश का संकल्प अडिग है। भविष्य की राह कठिन हो सकती है, पर दिशा स्पष्ट है। भारत अब सोया हुआ नहीं, बल्कि जागृत शेर है—जो आत्मविश्वास, साहस और संकल्प के साथ आगे बढ़ रहा है।

जहाज को गिरफ्तार करो: हाई कोर्ट ने बड़ा फैसला सुनाया

मनोरंजन सासमल, स्टेट हेड ओइशिया

भूबनेश्वर : शुक्रवार को कटक हाई कोर्ट ने पारादीप पोर्ट पर खड़े एक जहाज को जब्त करने का आदेश दिया। जस्टिस एम.एस. रमन की एक टेम्पररी बेंच ने एक समुद्री विवाद के मामले की सुनवाई करते हुए यह आदेश दिया। मामले की अगली सुनवाई 5 जनवरी से शुरू होने वाले हफ्ते में होगी। जानकारी के मुताबिक, पिटीशनर, जलभी ओवरसीज प्राइवेट लिमिटेड ने जहाज MV ड पैट्रन (IMO 9481439) के खिलाफ 2,02,000 US डॉलर के अमानुअल के लिए हाई कोर्ट में केस किया है। पिटीशनर ने केस की अर्जेंट हियरिंग की रिक्वेस्ट करते हुए कहा है कि जहाज जल्द ही पारादीप पोर्ट से निकल सकता है। पिटीशनर ने कहा है कि अगर जहाज पारादीप पोर्ट से निकल जाता है तो केस इररेलेवंट हो जाएगा। इसके बाद, वेकेशन बेंच ने शुक्रवार शाम 4:45 बजे केस की सुनवाई की।



सुबह की चाय से मोबाइल तक : अखबार की जगह सोशल मीडिया



सुनील कुमार मल्ला

डिजिटल क्रांति, सोशल मीडिया और कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) ने मानव जीवन को जितना सुविधाजनक बनाया है, उतना ही उसकी कुछ पुरानी और उपयोगी आदतों को धीरे-धीरे हाशिये पर भी धकेल दिया है। आज का बच्चा कागज़ से ज़्यादा स्क्रीन से जुड़ा है। हाथों में अखबार या पुस्तक की जगह मोबाइल फोन, टैबलेट और लैपटॉप ने ले ली है। परिणामस्वरूप बच्चों में फिजीकली (हाथ में अखबार की हाई कापी लेकर अखबार पढ़ना) अखबार पढ़ने की आदत लगातार कम होती जा रही है, जो समाज और शिक्षा दोनों के लिए एक गंभीर चिंता का विषय है।

अखबार केवल समाचारों का संग्रह नहीं होता, बल्कि वह ज्ञान, भाषा, विचार और दृष्टिकोण को विकसित करने का सशक्त माध्यम है। अखबार पढ़ने से बच्चों में शब्द-भंडार बढ़ता है, भाषा शुद्ध होती है और समसामयिक घटनाओं की समझ विकसित होती है। प्रतियोगी परीक्षाओं की दृष्टि से भी अखबार अत्यंत उपयोगी है। इसके बावजूद आज के बच्चे त्वरित और सतही जानकारी की आदी होते जा रहे हैं। सोशल मीडिया पर कुछ सेकंड के वीडियो, अधूरी खबरें और भ्रामक सूचनाएँ उन्हें सहज तो लगती हैं, लेकिन गहराई से सोचने की क्षमता को कमजोर कर देती हैं। डिजिटल माध्यमों पर उपलब्ध समाचार एग्लोरिथ्म के अनुसार परोसे जाते हैं, जिससे बच्चों को वही दिखता है जो उनकी रुचि या पसंद से जुड़ा होता है। इसके विपरीत अखबार पढ़ने से व्यक्ति राजनीति, अर्थव्यवस्था, विज्ञान, खेल, संस्कृति और साहित्य-सभी विषयों से एक साथ जुड़ता है। यह व्यापक दृष्टिकोण आज के बच्चों में धीरे-धीरे कम हो रहा है। पुस्तकालयों की ओर घटना रहाना भी इसी प्रवृत्ति का परिणाम है, जहाँ कभी अध्ययन और चिंतन का वातावरण हुआ करता था। एआई और इंटरनेट का उपयोग आज के आधुनिक दौर में निस्संदेह आवश्यक और लाभकारी है, लेकिन समसमयता पैदा होती है जब ये साधन ही जीवन का उद्देश्य बन जाँएँ। बच्चों में एकाग्रता की कमी, धैर्य का अभाव और पढ़ने से अरुचि इसी का संकेत है।

अखबार पढ़ना एक अनुशासन सिखाता है। सुबह समय निकालकर बैठना, खबरों को क्रम से पढ़ना और तथ्यों को समझना, बहुत ही अच्छी आदत है। वास्तव में कहना सही आदत नहीं होगा कि यह आदत बच्चों के व्यक्तित्व विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है। आज के समय में यह बहुत ही आवश्यक हो गया है कि माता-पिता, शिक्षक और समाजमित्र अखबार बच्चों में अखबार पढ़ने की रुचि फेर से जगाएँ। घर और विद्यालयों में 'अखबार पढ़न समय' तय किया जाए, पुस्तकालयों को आकर्षक बनाया जाए और बच्चों को चर्चा-परिचर्चा के माध्यम से पढ़ी गई खबरों पर बोलने के अवसर दिए जाएँ। डिजिटल युग में रहते हुए भी अगर हम कागज़ के अखबार से बच्चों को रिश्ता बनाए रख सकें, तो यह उनके बौद्धिक और नैतिक विकास के लिए एक सुदृढ़ आधार सिद्ध होगा। सोशल मीडिया और एआई के इस दौर में तकनीक के साथ संतुलन बनाना ही समय की सबसे बड़ी

आवश्यकता है। अखबार पढ़ने की आदत बच्चों को न केवल बेहतर नागरिक बनाती है, बल्कि उन्हें सोचने-समझने वाला जागरूक इंसान भी बनाती है। दूसरे शब्दों में कहें तो सोशल नेटवर्किंग साइट्स और एआई के इस युग में आज हमारे युवाओं में अखबार पढ़ने की संस्कृति का लगातार विलोप होना चला जा रहा है। यह आज के समय की विडंबना ही कही जा सकती है कि आज की हमारी युवा पीढ़ी इंटरनेट, सोशल नेटवर्किंग साइट्स फेसबुक, इंस्टाग्राम, ट्विटर (अब एक्स), यूट्यूब, व्हाट्सएप पर अपना ज़्यादा समय बिताती है। पहले एक दौड़ था जब युवा पीढ़ी अखबार पढ़ने में तल्लीन व खुश नज़र आती थी। वास्तव में अखबार केवल खबरों का ही संग्रह नहीं है, बल्कि यह ज्ञान, जागरूकता और समझ का असली द्रव्य है। नियमित रूप से अखबार पढ़ना व्यक्ति को बौद्धिक रूप से समृद्ध और समाज के प्रति अधिक संवेदनशील बनाता है।

अखबार न केवल हमें देश-दुनिया की ताज़ा घटनाओं से जोड़ता है, बल्कि हमारे व्यक्तित्व और हमारी सोच को भी समृद्ध करता है। अखबार में ताज़ा और विश्वसनीय जानकारी जानकारी होती है और अखबार के माध्यम से हमें राजनीति, अर्थव्यवस्था, खेल, विज्ञान, शिक्षा और समाज से जुड़ी सटीक व प्रामाणिक जानकारी मिलती है, जिससे हम समय के साथ अपडेट रहते हैं। अखबार हमारे ज्ञान और सामान्य जानकारी में वृद्धि करते हैं। कहना गलत नहीं होगा कि रोज अखबार पढ़ने से सामान्य ज्ञान बढ़ता है। प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी कर रहे विद्यार्थियों के लिए तो यह अत्यंत उपयोगी साबित होता है। अखबार पढ़ने से हमारे अंदर भाषा और शब्द-भंडार का विकास होता है। सच तो यह है कि अखबार पढ़ने से भाषा पर पकड़ मजबूत होती है, नए शब्द सीखने को मिलते हैं और लेखन व अभिव्यक्ति क्षमता में सुधार होता है। अखबार हमारे अंदर विचारशीलता और विश्लेषण क्षमता का विकास करते हैं। संपादकीय और विचार लेख पढ़ने से घटनाओं को विभिन्न दृष्टिकोणों से समझने की आदत पड़ती है, जिससे तार्किक और संतुलित सोच विकसित होती है। अखबार हमें समाज व देश की विभिन्न समस्याओं, विभिन्न सरकारी योजनाओं और अधिकार-कर्तव्यों से अवगत कराता है, जिससे एक जागरूक नागरिक बनने में मदद मिलती है। सुबह-सुबह अखबार पढ़ना एक अच्छी आदत है, जो दिन की सकारात्मक शुरुआत कराता है और समय का रचनात्मक उपयोग सिखाता है। अखबार में विभिन्न साम-सामयिक विषयों की जानकारी होने से बातचीत, बहस और मंच पर बोलते समय आत्मविश्वास बढ़ता है। छात्रों का सामान्य ज्ञान बढ़ाने, उन्हें देश-दुनिया की खबरों से जोड़ने और प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए तैयार करने के उद्देश्य से सरकारें अखबार स्कूलों में अखबार पढ़ने पर जोर दे रही हैं। अखबार केवल खबरों का पुर्लिया नहीं है, बल्कि सामाजिक संवाद और सामूहिक बौद्धिकता का माध्यम है। बुजुर्गों की वह तल्लीनता दरअसल अनुभव, धैर्य और सोच की गहराई की परिचायक थीं। वे खबर को सिर्फ पढ़ते नहीं थे, बल्कि उसके निहितार्थ समझते थे—देश, समाज और आने वाली पीढ़ी के संदर्भ में उस पर विचार करते थे। गाँव की चौपाल, चाय की थड़ी या दुकान पर रखा एक अखबार कई लोगों को जोड़ देता था। अलग-अलग विचार, सहमति-असहमति और तर्क-वितर्क के बीच लोकतांत्रिक चेतना स्वतः पनपती थी, लेकिन समय के साथ तस्वीर बदल गई। मोबाइल फोन और सोशल मीडिया ने सूचनाओं की बाढ़ तो ला दी, पर उठराव और अखबार छीन ली। अखबार पढ़ने से ज़्यादा स्कॉल करने की आदत बन गई है। चर्चा-परिचर्चा की जगह त्वरित प्रतिक्रिया, अधूरी जानकारी और भावनात्मक टिप्पणियों ने ले ली है। इसका अंतर यह हुआ कि सामूहिक चिंतन की परंपरा कमजोर पड़ती चली गई। फिर भी यह कहना गलत होगा कि अखबार की प्रासंगिकता समाप्त हो गई है।

आज भी अखबार विश्वसनीयता, विश्लेषण और संतुलन का प्रतीक है। जरूरत इस बात की है कि हम पुरानी परंपरा के सार को नई पीढ़ी तक पहुँचाएँ—उन्हें खबर पढ़ने, समझने और उस पर संवाद करने की संस्कृति से जोड़ें। यदि गाँवों की चौपालों और शहरों की चाय की दुकानों पर फिर से अखबार के इर्द-गिर्द संवाद शुरू हों, तो यह न केवल सूचना की बाढ़ को नियंत्रित करेगा, बल्कि समाज को सोचने-समझने वाली दिशा भी देगा। इसी क्रम में, यहां पाठकों को बताता चर्च पहले 24 जून को हिमाचल प्रदेश सरकार ने सभी सरकारी स्कूलों की सुबह की प्रार्थना सभा में बच्चों द्वारा रोज अखबार पढ़ने की व्यवस्था करने के निर्देश दिए थे। अब उत्तर प्रदेश की योगी सरकार ने भी राज्य के सभी बेसिक और सैकेंडरी सरकारी स्कूलों में छात्रों के लिए अखबार पढ़ना अनिवार्य कर दिया है। वास्तव में, इसका उद्देश्य बच्चों में पढ़ने की आदत विकसित करना, उनका सामान्य ज्ञान बढ़ाना और वाद-विवाद व आत्मविश्वास के साथ बोलने की क्षमता को मजबूत करना है, ताकि वे भविष्य में चुनौतियों का सामना कर सकें। 123 दिवस की जारी आदेश में उत्तर प्रदेश सरकार के मुख्य सचिव (बेसिक व सैकेंडरी शिक्षा) पाथ्यसारथी सेन शर्मा ने कहा है कि हिंदी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं के समावेश को स्कूल शिक्षा का जरूरी हिस्सा बनाया जाए। इससे बच्चों का मोबाइल फोन पर समय कम होगा और वे उपयोगी जानकारी से जुड़ेंगे। आदेश के अनुसार, हर दिन स्कूल की प्रार्थना सभा में 10 मिनट का समय तय किया जाएगा, जिसमें बच्चे बारी-बारी से अखबार की खबरें पढ़ेंगे। इससे उन्हें देश-विदेश की महत्वपूर्ण घटनाओं, खेल जगत की खबरों और अन्य समासामयिक विषयों की जानकारी मिलेगी। अधिकारियों का यह मानना है कि अखबार पढ़ने से बच्चों का सामान्य ज्ञान बढ़ेगा, वे सही-गलत की पहचान करना सीखेंगे और आगे के जीवन में यह ज्ञान उदरगम्य बहुल काम आएगा। निश्चित रूप से आज के प्रतिस्पर्धी समय में अखबार पढ़ने की आदत बहुत लाभकारी है। इसलिए अन्य राज्य सरकारों को भी अपने स्कूलों में ऐसी व्यवस्था लागू करनी चाहिए।

प्रौलांसा राइटर, कॉलमिस्ट व युवा साहित्यकार, पिथौरागढ़, उत्तराखंड।

स्कूली छात्र बस से मुफ्त यात्रा करेंगे

मनोरंजन सासमल, स्टेट हेड ओइशिया

भूबनेश्वर : राज्य में बहुत जल्द मुख्यमंत्री बस सर्विस लाने की जा रही है। ट्रांसपोर्ट मिनिस्टर विमोला जेना ने इस बारे में जानकारी दी है। श्रव से सरकारी स्कूल के स्टूडेंट्स इस बसे में फ्री में सफर करेंगे। इस बारे में स्कूल प्रिंसिपल एमकेएस डिवायट्टे से बातचीत हो चुकी है। ट्रांसपोर्ट डिपार्टमेंट को कोई बुरासाब न हो, इसके लिए बातचीत हो चुकी है। इसी सुविधाएं करीब 1422 सरकारी बसों में दी जाएगी। स्टूडेंट्स अपनी स्कूल यूनिफॉर्म और ID कार्ड दिखाकर इस सर्विस का फायदा उठा सकते हैं। SRTC तय करेगा कि किस रूट पर कितनी बसें चलेंगी। जानकारी है कि यह सुविधा सिर्फ गाँव के स्कूलों में पढ़ने वाले स्टूडेंट्स को ही दी जाएगी।



सांसद माननीय एटेला राजेंद्र को 18 जनवरी को होने वाले आजादी के बाद प्रथम उत्तराखंड सांस्कृतिक कार्यक्रम महाकौथिंग में बतौर प्रमुख अतिथि के रूप में पधारने के लिए किया आमंत्रित

परिवहन विशेष न्यूज

तेलंगाना, हैदराबाद, मलकाजिरी लोकसभा क्षेत्र से भारतीय जनता पार्टी (BJP) के वर्तमान सांसद माननीय श्री एटेला राजेंद्र जी को 18 जनवरी को लेने वाले आजादी के बाद प्रथम उत्तराखंड सांस्कृतिक कार्यक्रम महाकौथिंग में बतौर प्रमुख अतिथि के रूप में पधारने के लिए आमंत्रित किया। माननीय सांसद महोदय ने सखी विभाग स्वीकार कर अपनी आने की स्वीकृति प्रदान की।

श्री दक्षिणेश्वर देवराज्य भोंदर परिसर एल्फेट (मैदुवत) में लेने वाले इस महाकौथिंग में उत्तराखंड के लोक संस्कृति पर आधारित नृत्य संगीत कला सहित पर आधारित महाकौथिंग में विशेष रूप से

उत्तराखंड के जाने-माने महाकौथिंग के दर्जनों कलाकार आमंत्रित किए गए। महाकौथिंग के अध्यक्ष डा. कुर जयपाल सिंह नयाल सनातनी एवं महाकौथिंग की मुख्य संयोजक श्रीमती दीपति रावत ने इस पवित्र उत्तराखंडी संस्कृति महाकौथिंग को सुदूर दक्षिण भारत के तेलंगाना में भी जीवित रखने, सफल बनाने हेतु सभी प्रदासी उत्तराखंड के लोगों से जुड़ने की अपील की है।

आज सांसद श्री एटेला राजेंद्र जी को आमंत्रित करते हुए देवमिनि उत्तराखंड सेवा संस्थान के अध्यक्ष जयपाल सिंह नयाल, बलवीर प्रसाद पैनीली, राजेंद्र नौगी, लाला राम दीक्षित, पवन ध्यानी, लक्षण आदि..



15 वें वित्त आयोग की सिफारिश से झारखंड मिले 275.12 करोड़

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड-झारखंड

रांची, सरकार ने 15 वें वित्त आयोग की सिफारिशों के तहत झारखंड को 275.12 करोड़ रुपये की पहली किस्त जारी कर दी है। यह राशि वित्तीय वर्ष 2024-25 के लिए दी गई है और इसका उद्देश्य राज्य में पंचायती राज संस्थाओं तथा ग्रामीण स्थानीय निकायों को मजबूत करना है। यह फंड राज्य के सभी 24 जिलों के 253 प्रखंडों और 4,342 ग्राम पंचायतों के लिए आवंटित किया गया है। केंद्र सरकार यह अनुदान पंचायती राज मंत्रालय और जल शक्ति मंत्रालय (पेयजल एवं स्वच्छता विभाग) के माध्यम से राज्य को देती है। वित्त आयोग के नियमों के अनुसार, यह राशि एक वित्तीय वर्ष में दो किस्तों में जारी की जाती है। पहली किस्त जारी होने के बाद दूसरी किस्त बाद में दी जाती है। इस राशि का उपयोग गाँवों और पंचायत स्तर पर

बुनियादी सुविधाओं को बेहतर बनाने के लिए किया जा सकता है। इसमें स्वच्छता व्यवस्था को मजबूत करना, खुले में शौच मुक्त (ओडीएफ) स्थिति को बनाए रखना, घरेलू कचरा प्रबंधन, पेयजल आपूर्ति, वर्षा जल संचयन और जल पुनर्चक्रण जैसे महत्वपूर्ण कार्य शामिल हैं। हालांकि इस फंड को लेकर राजनीतिक बयानबाजी भी शुरू हो गई है। कांग्रेस ने कहा है कि केंद्र से झारखंड को बहुत कम राशि मिली है। कांग्रेस का दावा है कि राज्य के लिए 2700 करोड़ रुपये की मांग की गई थी, लेकिन केवल 275 करोड़ रुपये ही जारी किए गए, पाटी ने केंद्र सरकार से शेष राशि जल्द जारी करने की मांग की है। वहीं भाजपा का कहना है कि अगर राज्य में घपले-घोटाले न हों, तो केंद्र सरकार हर संभव मदद के लिए तैयार है। कुल मिलाकर, इस फंड से पंचायतों और जिला परिषदों के विकास कार्यों को गति मिलने की उम्मीद है

संरचना और कार्य

- > संरचना: एक अध्यक्ष और चार अन्य सदस्य, जिनकी नियुक्ति राष्ट्रपति द्वारा की जाती है।
- > प्रमुख कार्य:
 - केंद्र और राज्यों के बीच करों (Taxes) के शुद्ध आगम का वितरण (Distribution of net proceeds)। राज्यों को दिए जाने वाले सहायता अनुदान (Grants-in-aid) के सिद्धांत निर्धारित करना।
 - राज्य वित्त आयोग की सिफारिशों के आधार पर पंचायतों और नगर पालिकाओं के संसाधनों की पूर्ति के लिए राज्य की संचित निधि को बढ़ाने के उपाय सुझाना।
- > प्रकृति: इसकी सिफारिशें सलाहकारी (advisory) होती हैं, सरकार पर बाध्यकारी नहीं।



जब पाइक विद्रोह को इतिहास में ऊंचा स्थान मिला तो सरायकेला का फरिखंडा सैल्यूट राजकीय अतिथि सत्कार में सुमार हो

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्थम्भकार
(झारखंड-ओडिशा)

सरायकेला, चंद दिन पहले रूस के राष्ट्रपति पुतिन ने भारत के राष्ट्रपति के एक सुरक्षा प्रहरी भूदेव परिडा के साथ सर्वप्रथम हाथ मिलाकर देश-दुनिया को स्तब्ध कर दिया था -कारण था सामरिक महत्व। भूदेव परिडा उत्कलीय सैनिक परिवार से ताल्लुक रखते हैं। बड़ी बात राष्ट्रपति पुतिन स्वयं भी सैन्य अधिकारी रहे हैं और रूस भारतीय सैनिक इतिहास एवं उसकी गतिविधियों को भली भांती तबसे जानता आ रहा है जबसे वह भारत का अच्छा दोस्त माना जाता रहा है।...और वह भूदेव परिडा ओडिशा से है जिस ओडिशा को अपनी पाइक सेना पर गर्व ही नहीं उसकी इतिहास आगामी एनसीआईआरटी किलारों में पढ़ाई होने वाली है। (वास्तव - फरिखंडा ओडिशा का सामरिक गाथा है। झारखंड के जिस सरायकेला खरसावां जिले में राष्ट्रपति द्रोपदी मूर्मू का आगमन होने जा रहा है उसकी अपनी पाइक कला भी फरिखंडा है। कभी वह सामरिक कला यहां के राजा, राज अतिथियों का स्वागत हेतु फरिखंडा लिए तैयार रहता था, परन्तु

उत्कलीय परंपरा इतिहास को झारखंड सरकार दफना चुकी है। आज शोध नहीं होते झारखंड की इन उत्कलीय संस्कृतियों की।

सरायकेला प्रिंसली स्टेट की ऐतिहासिक माटी की अपनी विशेषता रही है कि जब कभी कोई राजकीय विशिष्ट व्यक्ति उसके यहां मेहमान बनकर आता तब उसके स्वागत सम्मान में सामरिक फरिखंडा की ढाल तलवार युक्त सैल्यूट दी जाती थी। आज दुर्लभ हो चुका है इस माटी का ऐतिहासिक समृद्धिशाली विरासत व उस उत्कलीय परंपरा। यद्यपि आजाद भारत में उसे केंद्र सरकार का पूर्ण संरक्षण मिला था कभी इसके समूचे कलात्मक विरासत को बनाए रखने हेतु निर्देश भी। संभवतः यही वजह रहा कि उसके रियासत मार्जार एग्रीमेंट में स्पष्ट लिखा गया जो गवर्नर जनरल एवं शासक राजा के बीच हस्ताक्षरित हुए By resion of its geographical situation the smallness of its size and it's resources and oneness of its economic and cultural life with that of the province of Odisha. It is apparent that the complet



marger of the state in the province of Odisha is the only way of securing peace progress and prosperity of its people.

अब सवाल आता है किनका सांस्कृतिक जीवन फरिखंडा जैसे कला रहा। आज महामहिम राष्ट्रपति को कौन सा सैल्यूट सरायकेला माटी देगा जिले के ओडिशा लोग जानने को विशेष रूप में लालायित हैं।

कला, संस्कृति को तहस नहस करने से लेकर सरायकेला खरसावां की भाषा - संस्कृति को उजाड़ने, यहां तक कि लोगों

के जमीन जायदाद तक आज धड़ल्ले से गैर कानूनी ढंग से दखल करने का एक बड़ा खेल सरकारी संरक्षण में जारी है। जिसका परिणाम आज ऐतिहासिक फरिखंडा सैल्यूट तक राजकीय अतिथियों के लिए पहले ही दुर्लभ हो चुका है।

सच तो यह है कि यह उत्कलीय फरिखंडा अपनी विश्व विख्यात सरायकेला छऊ का क-ख-ग-घ कही जाती है। फरिखंडा कोई ऊऊ नृत्य नहीं वल्कि उसके उद्गम का आधार है राजकीय सामरिक गाथा का। उत्कलीय सामरिक शस्त्र वेशभूषा धारी पाइकों का छावनी से

निकला है छऊ है, जिस पाइक परंपरा को ओडिशा के खोंदा में जाकर स्वयं पूर्ण राष्ट्रपति प्रणव मुखर्जी तथा रामनाथ कोविन्द उद्घाटन कर चुके हैं। भारत का प्रथम स्वतंत्रता संग्राम -1857 मानी जाती पर आज जो एन सी आई आर टी किताब आने वाली है उसमें ओडिशा का पाइक विद्रोह के विषय बच्चे पढ़ने का रहे हैं। उससे 40 वर्ष पहले 1817 का पाइक विद्रोह जिसका मुख्य अस्त्र-शस्त्र वहीं ढाल तलवार रहा कलिंग का। जहां आज सरायकेला, सिंहभूम उत्तर कलिंग भी समाहित है।

आज ओडिशा की भांती सरायकेला राजा गण, अतीत के पाइक सैन्य के सेनापति-सेनानी, खंडायत परिवार सोलह दिनों तक सरायकेला में दुर्गा पूजा कर मां दुर्गा सामने से जब तलवार उठाते अथवा राजा मां दुर्गा को वन्दुर्गा को पूजन आने वाली है उसमें ओडिशा का पाइक विद्रोह को धुन बजता उसे राज विजय कहते हैं। आज भी उक्त तलवारों को उठाकर नाचने की परंपरा कहीं-कहीं सरायकेला ऐतिहासिक माटी का गौरव कहते हैं। आज भी उक्त तलवारों को मिट जाएं भारत मां के लाल जिन्होंने सरायकेला के जमीन पर कभी मुगल मराठा अंग्रेजों को आने नहीं दी, यूनिनन जैक फहराने नहीं दिया था।

नृत्य राज विजय ध्वनि बजता। वास्तव में राज विजय वही वाद्य है जो युद्ध में विजय हेतु निकलते वक्त सामरिक वाद्य के रूप बजता था सरायकेला माटी में। यह राजकीय धुन फरिखंडा पहनावे के साथ अतिथियों का स्वागत हेतु फरिखंडा सैल्यूट होता था।

1620ई से 1947 ई तक सरायकेला स्टेट की सैन्य छावनीयों में यह मार्शल आर्ट राजघराने में पूर्ण संरक्षण में रहा। युद्ध मैदान में जाते सैनिकों के चाल में गुंजायमान होने वाला धुन अपनी ही माटी में अब आज उपेक्षित है। नती अतिथियों को फरिखंडा नसीब हो पा रहा नहीं इसकी स्वर्णिम अतीत को संरक्षण मिलता है। सब कुछ ढाक के नीचे तात साबित हो रहा है। आज देश आजाद होने के बाद सरायकेला प्रशासन गडविषय परिवार तक को बड़ा ही षड्यंत्र रचकर उन्हें अलग थलग कर दिया है। ताकि सरायकेला ऐतिहासिक माटी का गौरव गायथा आजाद भारत में बिल्कुल मिट जाय, को मिट जाएं भारत मां के लाल जिन्होंने सरायकेला के जमीन पर कभी मुगल मराठा अंग्रेजों को आने नहीं दी, यूनिनन जैक फहराने नहीं दिया था।

झारखंड में एसआईआर फरवरी में पर 12 लाख मतदाताओं का दस्तावेज अबतक जमा नहीं

चुनाव अधिकारी दस्तावेज जमा हेतु देंगे वोटों को नोटिस

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड - झारखंड

रांची। झारखंड में मतदाता सूची के होने वाले विशेष गहन पुनरीक्षण के दौरान गलत दस्तावेज देनेवाले मतदाताओं के विरुद्ध कार्रवाई हो सकती है। झारखंड में एसआईआर अगले वर्ष फरवरी माह में हो सकता है, इसके लिए राज्य में जोर-शोर से तैयारी चल रही है। फिलहाल, वर्तमान मतदाता सूची की वर्ष 2003 की मतदाता सूची से पैरेंटल मैपिंग तथा मतदान केंद्रों की जिया फेंसिंग तथा रेशनलाइजेशन की प्रक्रिया चल रही है। अबतक की पैरेंटल मैपिंग में लगभग 12 लाख मतदाता चिह्नित किए गए हैं, जिनके नाम आवश्यक दस्तावेज जमा नहीं करने पर कार्टे जा सकते हैं। इधर, भारत निर्वाचन आयोग ने बंगाल सहित अन्य राज्यों में चल रहे एसआईआर के दौरान बड़े पैमाने पर फर्जी सर्टिफिकेट के आधार पर मतदाता पहचान पत्र बनने के मामले आने के बाद राज्यों के लिए आवश्यक निर्देश जारी किए हैं। इसमें कहा गया है कि जिन मतदाताओं को निर्वाचन निबंधन पदाधिकारियों की ओर से नोटिस जारी किया जाएगा, उन्हें निर्धारित दस्तावेज जमा करने होंगे। इसमें पिछली विशेष गहन पुनरीक्षण प्रक्रिया से जुड़ी मैपिंग के प्रमाण



भी सम्मिलित हो सकते हैं। संबंधित मतदाताओं द्वारा दिए गए सभी दस्तावेज वृथ् लवल ऑफिसर ऐप के जरिए अपलोड किए जाएंगे। इसके बाद निर्वाचन निबंधन पदाधिकारी अधिकारी इन दस्तावेज की जांच करेंगे। दस्तावेज की जांच संबंधित प्राधिकार से कराया जाएगा। यह प्रक्रिया जिला निर्वाचन अधिकारी के माध्यम से होगी और ईसीआईनेट में दस्तावेज मिलने के पांच दिनों के भीतर पूरी करनी होगी। यदि कोई

दस्तावेज उसी राज्य के किसी अन्य जिले से जारी हुआ है तो उसे ईसीआईनेट के माध्यम से संबंधित जिले के जिला निर्वाचन अधिकारी को भेजा जाएगा। वहां से सत्यापन के बाद दस्तावेज वापस भेजे जाएंगे। अगर दस्तावेज किसी दूसरे राज्य के प्राधिकार से जारी हुआ है तो उसे राज्य के मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी के जरिए संबंधित राज्य के मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी को भेजा जाएगा, ताकि तुरंत जांच हो सके।

नववर्ष 2026 : समय के आईने में अपनी 'असलियत' से एक मुलाकात

उमेश कुमार साहू

कैलेंडर की दीवार पर टंगी पुरानी तारीखें उतर चुकी हैं। एक और वर्ष हमारी स्मृतियों की अलमारी में सहेज दिया गया है। हम 2026 की दहलीज पर खड़े हैं। बीता हुआ समय अब केवल तारीख नहीं, बल्कि अनुभवों, सफलताओं, टूटे हुए सपनों और फिर से खड़े होने के हासलों की एक गठरी बन चुका है।

अक्सर हम कहते हैं, "नया साल आ गया।" लेकिन क्या सच में? सूर्य वही है, धरती वही है, और आकाश भी वही। अगर कुछ बदलना है, तो वह तारीख नहीं, बल्कि 'हम' हैं। नया वर्ष कोई जादुई चाबी नहीं जो जीवन के सारे ताले खोल दे; यह तो एक 'संकेत' है - भागती हुई जड़ियों में एक पल ठहरने का, भीतर झाँकने का और अपनी दिशा तय करने का।

समय नहीं बीतता, हम बीत रहे हैं।

हमारी सबसे बड़ी गलतफहमी यह है कि समय बीत रहा है। सच यह है कि समय अपनी गति से स्थिर है, बीत तो हम ही हैं। हमारी आयु का एक-एक क्षण रेत की तरह मुझे से फिसल रहा है। समय इस ब्रम्हांड की एकमात्र ऐसी मुद्रा (Currency) है जिसे न तो कमाया जा सकता है, न बचाया जा सकता है, इसे केवल 'जिया' जा सकता है।

नववर्ष 2026 हमें आईने के सामने खड़ा होकर एक कठोर प्रश्न पूछने का साहस देता है: "क्या मैं अपने अनमोल पलों को जी रहा हूँ,

या सिर्फ खर्च कर रहा हूँ?"

आभासी चमक और खोती हुई वास्तविकता आज की विडंबना देखिए, हमारे पास संपर्क (Connection) के साधन असीमित हैं, लेकिन आत्मीय संवाद (Communication) शून्य हो गया है। हम एक ऐसे 'डिजिटल मिराज' (Digital Mirage) में जी रहे हैं जहाँ 'लाइक्स' और 'व्यूज़' हमारे आत्म-सम्मान का पैमाना बन गए हैं। दूसरों की एंजिट की हुई, फिल्टर लगी तस्वीरों को देखकर अपनी साधारण जड़ियों को कोसना, यह आज की पीढ़ी की सबसे बड़ी मानसिक त्रासदी है। हम भूल गए हैं कि सोशल मीडिया पर दिखने वाली 'चमक' और 'व्यूज़' हमारे आत्म-सम्मान का पैमाना बन गए हैं।

दूसरों की एंजिट की हुई, फिल्टर लगी तस्वीरों को देखकर अपनी साधारण जड़ियों को कोसना, यह आज की पीढ़ी की सबसे बड़ी मानसिक त्रासदी है। हम भूल गए हैं कि सोशल मीडिया पर दिखने वाली 'चमक' और 'व्यूज़' हमारे आत्म-सम्मान का पैमाना बन गए हैं। दूसरों की एंजिट की हुई, फिल्टर लगी तस्वीरों को देखकर अपनी साधारण जड़ियों को कोसना, यह आज की पीढ़ी की सबसे बड़ी मानसिक त्रासदी है। हम भूल गए हैं कि सोशल मीडिया पर दिखने वाली 'चमक' और 'व्यूज़' हमारे आत्म-सम्मान का पैमाना बन गए हैं।

दूसरों की एंजिट की हुई, फिल्टर लगी तस्वीरों को देखकर अपनी साधारण जड़ियों को कोसना, यह आज की पीढ़ी की सबसे बड़ी मानसिक त्रासदी है। हम भूल गए हैं कि सोशल मीडिया पर दिखने वाली 'चमक' और 'व्यूज़' हमारे आत्म-सम्मान का पैमाना बन गए हैं। दूसरों की एंजिट की हुई, फिल्टर लगी तस्वीरों को देखकर अपनी साधारण जड़ियों को कोसना, यह आज की पीढ़ी की सबसे बड़ी मानसिक त्रासदी है। हम भूल गए हैं कि सोशल मीडिया पर दिखने वाली 'चमक' और 'व्यूज़' हमारे आत्म-सम्मान का पैमाना बन गए हैं।

दूसरों की एंजिट की हुई, फिल्टर लगी तस्वीरों को देखकर अपनी साधारण जड़ियों को कोसना, यह आज की पीढ़ी की सबसे बड़ी मानसिक त्रासदी है। हम भूल गए हैं कि सोशल मीडिया पर दिखने वाली 'चमक' और 'व्यूज़' हमारे आत्म-सम्मान का पैमाना बन गए हैं। दूसरों की एंजिट की हुई, फिल्टर लगी तस्वीरों को देखकर अपनी साधारण जड़ियों को कोसना, यह आज की पीढ़ी की सबसे बड़ी मानसिक त्रासदी है। हम भूल गए हैं कि सोशल मीडिया पर दिखने वाली 'चमक' और 'व्यूज़' हमारे आत्म-सम्मान का पैमाना बन गए हैं।

हमें एक 'सतर्क नागरिक' बनना होगा, जो न भ्रम में आए, न भय में। रिश्तों में उपस्थिति: सबसे बड़ा उपहार

मोबाइल और इंटरनेट दूरियों को पाटने आए थे, लेकिन विडंबना यह है कि उन्हींने पास बैठे लोगों के बीच मौलों की दीवार खड़ी कर दी है। परिवार एक छत के नीचे है, पर हर कोई अपनी-अपनी स्क्रीन की दुनिया में कैद है। यह 'डिजिटल सन्नाटा' रिश्तों को खोखला कर रहा है।

इस वर्ष, अपने प्रियजनों को कोई महंगा तोहफा देने के बजाय, अपनी साधना, बिजली बंद करना और प्लास्टिक का त्याग - ये छोटे कदम ही हमारे बच्चों के भविष्य की गारंटी हैं।

दृष्टि बदलो, वर्ष बदलेगा

मित्रों, 2026 का सूरज उगने वाला है। यह सिरफ कैलेंडर बदलने की घटना नहीं है। यह अवसर है, अपनी पुरानी चमड़ी उतार फेंकने का। यह अवसर है, विज्ञान को विवेक के साथ, और तकनीक को संवेदना के साथ जोड़ने का। आइए, इस नववर्ष पर हम बड़े-बड़े संकल्पों का शोर न करें। बस एक मौन प्रतिज्ञा करें कि हम हर दिन कल से थोड़ा बेहतर बनने का प्रयास करेंगे। हम सुनें ज्ञायास, बोलेंगे कम। हम जुड़ेगे दिल से, डिवाइस से नहीं। याद रखें, जब हमारी 'दृष्टि' बदलती है, तभी समय का असली अर्थ बदलता है। आप सभी को एक जागरूक, सार्थक और रूपांतरकारी नववर्ष की असीम शुभकामनाएँ।

कंबल देना, किसी भूख को भोजन कराना, या किसी हताश व्यक्ति के कंधे पर हाथ रखना, यही सच्ची मनुष्यता है। हम ईंसान बने रहें, यह आज के दौर की सबसे बड़ी उपलब्धि है।

प्रकृति और भविष्य: एक अनिवार्य साझेदारी

अंत में, उस घर की बात जिसे हम 'पृथ्वी' कहते हैं। पर्यावरण संरक्षण अब कोई फैशन नहीं, बल्कि अस्तित्व की शर्त है। बर्बाद बारिश और आपदाएँ प्रकृति की चेतावनी हैं। हमें अपनी उपभोगवादी संस्कृति पर लगातार लगानी होगी। पानी बचाना, बिजली बंद करना और प्लास्टिक का त्याग - ये छोटे कदम ही हमारे बच्चों के भविष्य की गारंटी हैं।

दृष्टि बदलो, वर्ष बदलेगा

मित्रों, 2026 का सूरज उगने वाला है। यह सिरफ कैलेंडर बदलने की घटना नहीं है। यह अवसर है, अपनी पुरानी चमड़ी उतार फेंकने का। यह अवसर है, विज्ञान को विवेक के साथ, और तकनीक को संवेदना के साथ जोड़ने का। आइए, इस नववर्ष पर हम बड़े-बड़े संकल्पों का शोर न करें। बस एक मौन प्रतिज्ञा करें कि हम हर दिन कल से थोड़ा बेहतर बनने का प्रयास करेंगे। हम सुनें ज्ञायास, बोलेंगे कम। हम जुड़ेगे दिल से, डिवाइस से नहीं। याद रखें, जब हमारी 'दृष्टि' बदलती है, तभी समय का असली अर्थ बदलता है। आप सभी को एक जागरूक, सार्थक और रूपांतरकारी नववर्ष की असीम शुभकामनाएँ।

घरेलू महिला क्रिकेटर्स का मेहनताना बढ़ा सैलेरी बढ़ोतरी या लैंगिक न्याय की अधूरी कहानी?



बाबूलाल नागा

भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड (बीसीसीआई) द्वारा साल 2022 में महिला क्रिकेटर्स की सैलेरी पुरुष क्रिकेटर्स के समान करने का ऐतिहासिक फैसला लिया गया था। वहीं अब भारतीय क्रिकेट बोर्ड ने घरेलू महिला क्रिकेटर्स की सैलेरी में भी दोगुना से ज्यादा इजाफा करते हुए बड़ा कदम उठाया है। अब घरेलू क्रिकेट में महिला खिलाड़ियों की मैच फीस पुरुष खिलाड़ियों के समान हो गई है।

बीसीसीआई ने अपनी हालिया एपेक्स काउंसिल मीटिंग में घरेलू महिला क्रिकेटर्स की मैच फीस में बढ़ोतरी करने का फैसला किया। अब महिला खिलाड़ियों को घरेलू वनडे और मल्टी-डे (लंबे फॉर्मेट) मैचों में प्लेइंग इलेवन का हिस्सा होने पर प्रति दिन 50,000 रुपए मिलेंगे। वहीं, रिजर्व खिलाड़ियों को प्रति मैच 25,000 रुपए की राशि दी जाएगी। दूसरी ओर, टी20 मैचों के लिए प्लेइंग इलेवन की खिलाड़ियों को 25,000 रुपए और बेंच पर बैठी खिलाड़ियों को 12,500 रुपए प्रति मैच का भुगतान होगा। बता दें, इससे पहले सैलियर महिला खिलाड़ियों को प्लेइंग इलेवन में होने पर 20,000 रुपए और बेंच पर 10,000 रुपए मिलते थे। इससे अलावा जूनियर टूर्नामेंट में प्लेइंग इलेवन वाले खिलाड़ियों को 25,000 और रिजर्व में शामिल प्लेयर्स को 12,500 रुपए रोज मिलेंगे। ऐसे में अब घरेलू क्रिकेट में खेलने वाली महिला प्लेयर्स के सैलरी में दोगुना से भी ज्यादा का इजाफा हुआ है।

भारतीय महिला क्रिकेट ने लंबे समय तक वह चुप्पी झेली है जिसे इतिहास अक्सर प्रतिभाशाली लेकिन उपेक्षित वर्ग के हिस्से में लिख देता है। मैदान पर पसीना बहाने वाली महिला खिलाड़ी देश के लिए खेलती रहीं, लेकिन उनकी मेहनत का मूल्य वर्षों तक प्रतीकात्मक ही बना रहा। क्रिकेट जैसे लोकप्रिय खेल में भी महिला खिलाड़ियों को वह आर्थिक सम्मान नहीं मिल सका, जो उनके समर्पण और श्रम के अनुरूप होता। अब घरेलू महिला क्रिकेट में मेहनताना बढ़ाने का फैसला उस ऐतिहासिक चूक को सुधारने की दिशा में एक महत्वपूर्ण हस्तक्षेप है जिसे केवल खेल सुधार नहीं, बल्कि सामाजिक दृष्टि से भी देखा जाना चाहिए।

भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड द्वारा घरेलू महिला क्रिकेट की भुगतान संरचना में कई बढ़ोतरी यह संकेत देती है कि भारतीय क्रिकेट प्रशासन अब महिला खेल को परिधि से निकालकर केंद्र में लाने के लिए तैयार है। यह निर्णय उस दौर में आया है जब महिला क्रिकेट ने दर्शकों, प्रायोजकों और खेल विशेषज्ञों का ध्यान अपनी ओर खींचा है। क्योंकि खेल जगत लंबे समय से पुरुष-प्रधान रहा है - प्रशासन, वित्तपन, प्रसारण और पुरस्कारों तक में लैंगिक असंतुलन दिखाता है। अब अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भारतीय महिला टीम का प्रदर्शन, महिला प्रीमियर लीग की लोकप्रियता और बढ़ती दर्शक संख्या यह साबित कर चुकी है कि महिला क्रिकेट अब 'विकल्प' नहीं बल्कि मुख्यधारा का खेल बन चुका है।

हालांकि पुरुष और महिला क्रिकेट के बीच अंधेरे का सामाजिक पक्ष भी उतना ही महत्वपूर्ण है। भारत जैसे समाज में जहां आज भी कई जगह लड़कियों के लिए खेल को गंभीर

चुका है। हाल ही में भारतीय महिला क्रिकेट टीम ने साउथ अफ्रीका को हराकर महिला वनडे वर्ल्ड कप का खिताब जीता था। ऐसे में घरेलू ढांचे को मजबूत किए बिना आगे बढ़ना संभव नहीं था।

अब तक घरेलू महिला क्रिकेट खेलने वाली अधिकारी खिलाड़ी आर्थिक असुरक्षा के साये में अपना करियर गढ़ने की कोशिश करती रहीं। सीमित मैच फीस, अनियमित टूर्नामेंट और संसाधनों की कमी ने कई प्रतिभाओं को बीच रास्ते ही रोक दिया। अनेक खिलाड़ी पढ़ाई, नौकरी और खेल के बीच संतुलन बनाने के दबाव में जूझती रहीं। कई बार परिवारों को भी यह समझाना मुश्किल होता था कि क्रिकेट भविष्य दे सकता है। मेहनताना बढ़ने से यह भरोसा पैदा होगा कि महिला क्रिकेट केवल जुनून नहीं बल्कि सम्मानजनक पेशा भी बन सकता है।

महिला क्रिकेट टीम की सैलेरी में हुई बढ़ोतरी को महज एक खेल-संबंधी फैसला मान लेना उसके सामाजिक अर्थ को सीमित कर देना होगा। यह निर्णय दरअसल उस लैंगिक असमानता पर चोट है जो वर्षों से खेल की दुनिया में सामान्य मान ली गई थी। मैदान पर पसीना एक-सा बहता है, जोखिम समान होते हैं, देश का प्रतिनिधित्व भी बराबरी से किया जाता है, फिर वेतन में यह खाई क्यों? सैलरी बढ़ोतरी इसी असहज सवाल का आंशिक उत्तर है, पूरी न्यायिक मंजिल नहीं।

भारतीय महिला क्रिकेटर्स ने पिछले वर्षों में न केवल अंतरराष्ट्रीय स्तर पर लगातार बेहत प्रदर्शन किया है, बल्कि दर्शक संख्या, टीआरपी और खेल की लोकप्रियता में भी निर्यायक योगदान दिया है। इसके बावजूद उन्हें लंबे समय तक 'प्रेरणा' की श्रेणी में रखा गया, पेशेवर सम्मान से दूर। पुरुष खिलाड़ियों की सफलता को उपलब्धि कहा गया, जबकि महिलाओं की उपलब्धि को संघर्ष कथा बनाकर प्रस्तुत किया गया। यह पितृसत्तात्मक दृष्टि अब सवालों के घेरे में है।

सैलेरी बढ़ोतरी का महत्व इसलिए भी है क्योंकि यह महिला खिलाड़ियों के अदृश्य श्रम को दृश्य बनाती है। वे सिर्फ विरोधी टीमों से नहीं, बल्कि सामाजिक अर्थ को सुधारने की कमी और असुरक्षा से भी लड़ती हैं। यह वेतन वृद्धि उस संघर्ष की स्वीकारोक्ति है, जो अब तक आंकड़ों में दर्ज नहीं थी।

घरेलू महिला क्रिकेट में यह सुधार उस व्यापक बदलाव का हिस्सा है, जिसकी मांग लंबे समय से उठ रही थी। अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में मैच फीस की समानता की घोषणा पहले ही हो चुकी है। अब घरेलू स्तर पर यह कदम उस दिशा में निरंतरता का संकेत देता है। हालांकि पुरुष और महिला क्रिकेट के बीच अभी भी पूरी आर्थिक समानता नहीं है, लेकिन यह स्वीकार करना होगा कि बराबरी की यात्रा छोटे लेकिन निर्णायक कदमों से ही आगे बढ़ती है।

इस फैसले का सामाजिक पक्ष भी उतना ही महत्वपूर्ण है। भारत जैसे समाज में जहां आज भी कई जगह लड़कियों के लिए खेल को गंभीर

करियर विकल्प नहीं माना जाता, वहां आर्थिक मान्यता सोच बदलने का सबसे सशक्त माध्यम बनती है। जब एक महिला खिलाड़ी अपने खेल से आत्मनिर्भर बनेगी तो वह केवल व्यक्तिगत सफलता नहीं हासिल करेगी, बल्कि सामाजिक रूढ़ियों को भी चुनौती देगी। इससे परिवारों और समाज का नजरिया बदलेगा और बेटियों को मैदान में उतरने से रोकने के बजाय प्रोत्साहित किया जाएगा।

यह भी ध्यान रखना जरूरी है कि घरेलू क्रिकेट किसी भी खेल की रीढ़ होता है। यदि घरेलू स्तर मजबूत नहीं होगा, तो अंतरराष्ट्रीय सफलता टिकाऊ नहीं रह सकती। महिला क्रिकेट में यह सुधार राज्यों के बीच प्रतिस्पर्धा बढ़ाएगा, चयन प्रक्रिया को अधिक व्यापक बनाएगा और छोटे शहरों व ग्रामीण क्षेत्रों की प्रतिभाओं को आगे आने का अवसर देगा। इससे भारतीय महिला टीम का स्वरूप और अधिक विविध तथा समावेशी बन सकेगा।

घरेलू टूर्नामेंटों की संख्या और गुणवत्ता बढ़ाना भी इस प्रक्रिया का महत्व हिस्सा है। नियमित और प्रतिस्पर्धात्मक मैच ही खिलाड़ियों को निखारते हैं। साथ ही खिलाड़ियों के लिए शिक्षा, करियर संक्रमण और खेल के बाद के जीवन से जुड़ी योजनाओं पर भी विचार होना चाहिए। खेल जीवन सीमित होता है और उसके बाद की तैयारी समय रहते करना जरूरी है। यदि इन पहलुओं को नजरअंदाज किया गया, तो सुधार अधूरा रह जाएगा।

इसके बावजूद, घरेलू महिला क्रिकेट में मेहनताना बढ़ाने का फैसला भारतीय क्रिकेट के इतिहास में एक सकारात्मक मोड़ के रूप में दर्ज किया जाएगा। यह उन अनगिनत खिलाड़ियों के संघर्ष की मान्यता है जिन्होंने सीमित संसाधनों और सामाजिक दबावों के बावजूद मैदान नहीं छोड़ा। यह संदेश भी स्पष्ट है कि अब महिला क्रिकेट को उपेक्षित नहीं किया जा सकता।

भारतीय क्रिकेट यदि वास्तव में भविष्य की ओर देख रहा है, तो उसे इस फैसले को केवल एक घोषणा तक सीमित नहीं रखना चाहिए, बल्कि इसे निरंतर नीति और व्यवहार का हिस्सा बनाना होगा। यदि यह प्रतिबद्धता बनी रही, तो आने वाले वर्षों में महिला क्रिकेट न केवल उपलब्धियों में, बल्कि संसाधनों और सम्मान में भी पुरुष क्रिकेट के समानतर खड़ा दिखाई देगा। घरेलू महिला क्रिकेट में बढ़ा हुआ मेहनताना उसी भविष्य की बुनियाद है, जहां मैदान पर प्रतिभा का मूल्य लिंग से नहीं, प्रदर्शन से तय होगा।

महिला क्रिकेट टीम की सैलेरी बढ़ाना एक सकारात्मक लेकिन अधूरा कदम है। हालांकि जेडर दृष्टि से यह समान कार्य के लिए समान सम्मान की दिशा में पहला ठोस कदम माना जा सकता है पर असली जीत तब होगी जब खेल की दुनिया में महिला और पुरुष खिलाड़ियों को योग्यता, श्रम और उपलब्धि के आधार पर बिना लैंगिक भेदभाव के समान अवसर और सम्मान मिलेगा।

(लेखक भारत अपडेट के संपादक हैं)